

नवकार स्वरूप

(जिसमें नवपद के चित्र सहित गगो और चौदपुरव
विषय में अनेको विद्वानो मुनियों के अभी-
प्राय ओर मेम्फरनामा परसे कुछ
उतारा हाल के वर्तमान पर
लालबती)



लेखक और प्रकाशक
शील्प ज्योतिष मंत्र स्वर प्राणायाम योगनीष्ट ध्यानी
मुनीहर्षचंदमल जी महाराज

प्रथम आवृत्ती

प्रति ५००
१९५९

मुल्य
१।

लेखक —

शिल्प ज्योतिष मंत्र स्वर प्राणायाम ध्यानिष्ठ

— तपस्वी —

मुनि श्री हर्षविमल जी महाराज



श्री गुरूभ्यो नमः

स्वस्ति श्री पार्श्वनाथ प्रणम्य श्री। मध्ये अष्टकर्महता समकित दाता भविजन त्राता, ज्ञानविधान शासन शणगार, शुद्ध धर्म प्ररुपक आत्म कल्याण मग्न जितेंद्रिय भव भ्राति निवारक, पच समिति धारक त्रिगुप्तए गुप्त, रत्नाकर सम गभीर, कनकाचलवत धीर, राग द्वेषने जीतवामाटीर मिथ्या तिमिर भास्कर, सुधाकर समान शांत, छे कायना रक्षक, धर्मना उद्योतक, स्याद्वाद शैलीना ज्ञाता, चार कषाय उच्छेदक, यति धर्मना पालक, आठ मदना टालक, परोपकारीनी प्रतिमा, विवेकताविलासी, ससारना उदासी, शिव रमणीना प्यासी, तत्व ज्ञानना उल्लासी, मोक्ष मार्गना प्रकाशी परम पूज्य, चिरसांयध, अनेक गुणालकृत, अप्रतिम आनद दायक गुरुवर्य श्री १००८ मुनी राजा श्री आद्रिनणा जोग

श्री पाली थी लि० आपका दासानुदास चरण किंकर नीचे सही करनारा समेत समस्त श्री सघनी वदना १०८ वार प्रेम सहित स्वीकारवा कृपा करसो जी। वीजू आप महा समर्थ विद्वान जाणी आपने अमारा नीचे परमारेना प्रश्न प्रश्नो नी शका समाधान अगर जाणवा समजवानी इच्छा थता लखरा प्रेराया छीये तो आप पत्र पोंहचे योग्य उत्तर आ लेखको तथा

संघ उपर कृपा करमोजी।

(१) श्री नवकार मंत्र नो चौदह पुरवनो सार सी रीते गणवामा आवे तेना कारणो अने भेद होय ते जणावमो।

(२) श्री नवकार ना पांच पदोना पाच रंगोना भेद शु छे ?

(३) श्री उपधान तप अत्यारनी रीनी नो जेवी रीते श्री महावीर ना दस श्रावकों ने बारव्रत अगीयार पडीमाना नाम छे तेम चालु चोविसीमां क्या तीर्थंकरो ये कया कया श्रावकों ने कराव्या ते सुरोना नाम अगर आ परपरा क्यां थी चालु थई ते जाणता होने वगतनी केना थारा मायी प्रवृती थई ते लखवा कृपा करमो एम आपना उत्तर ना कृपाभिलापी श्रावको—

(१) भंडारी नियमचद	(८) पारसमल सुराणा
(२) दा मोतीलाल	(९) मभूतमल जैन
(३) दा. वस्तीमल (कानेरीया)	(१०) दा. रतनचद
(४) दाः सा विनेचद	(११) नेमीचद
(५) उमेदमल रायचदशाह	(१२) मागेकचद
(६) सुमेर राज डागा	(१३) भंडारी नेमीचद
(७) अमोलकचंद डागा	

इम प्रमाणे पत्र नीचे टिरा हुवे १८ आचार्य श्री को लिख मेजा उनों के नाम —

' आ उपर प्रमाणे पाली थी महान आचार्यो नीचे ना नामो छे तेओने पोस्ट सार्टीफीकेट थी पत्रों मोकलीया जण १८ ने तेमा जण पाच नो निचे प्रमाणे उत्तर आवयो छे बाकी

ना जण १३ नो उत्तर आव्या नहीं ।

१८ आचार्यों ना नाम'—

ता. ७—८—५१ ने पत्र मोकल्या

१ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य महाराज श्री विजय दर्शन सूरीजी आदीठाणा ३२ अमदा बाद

२ आचार्य श्री १००८ श्री सिद्धिसूरीजी आठे ठाणा ठि० विद्या शाणा अमदाबाद

३ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विजय रामचंद सूरी जी आठेठाणा ठे० श्री दान सूरीजी जैन ज्ञान शाला अमदाबाद

४ मुनी महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विजय प्रेमसूरीजी आदे ठाणा ठे० जैन लालबाग बहार कोट मुबई

५ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य विनयेंद्रसूरि आदेठाणा ठी० जैन श्वेतांबर मुर्तिपुजक उपासरो मु० केकडी अजमेर

६ आचार्य महाराज श्री १००८ श्री ज्ञान सुन्दर सुरीश्वरजी या देवगुप्त सूरीजी ठी० मोतीचोक जोधपुर

७ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य महाराज श्री विजय लब्धी सूरीजी जोग ठी० जैन उपाशरो (उत्तर गुजरात) ईडर

८ आचार्य महाराज श्री १००८ मेघसूरीजी आदेठाणा ठी० जैन श्वेतांबर मुर्तिपुजक उपासरा तपेगच्छ (राजेस्थान) बीकानेर

९ आचार्य महाराज श्री १००८ कविंद्र सागर जी ठी० कुदी गरोंका भेरू, खतरगच्छ का उपासरा जैपुर सिटी

१० मुनि महाराज श्री वीर पुत्र आनद सागर सुरीजी ठी० (मध्य भारत) मु: शैलाना (मालवा)
११ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विजय वलभ सुरी आदेठाणा केसरी (सौराष्ट्र) पालीताणा
१२ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री रतन सुरीश्वरनी जोग ठे० जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक उपासरो मु० गढ सिवाणा मारवाड़।
१३ मुनि महाराज श्री १००८ विद्या विजयजी आदेठाणा ठी० स्टेट ग्वालीयर मु० शिवपुरी जैन बोर्डींग में।
१४ श्री मुनि महाराज श्री १००८ पुन्य विजयजी आदेठाणा ठे० रावडी चोक जैन मुर्ति पूजक उपासरा (राजस्थान) बीकानेर
१५ आचार्य महाराज श्री १००८ हिमांचल सुरीजी आदेठाणा ठे० जैन श्वेतांबर मुर्तिपुजक उपासरो (सौराष्ट्र) वढवान सिटी
१६ महाराज श्री १००८ श्री लक्ष्मण सुरीजी आदेठाणा ठी० जैन श्वेतांबर उपाश्रय (महाराष्ट्र) जिला सतारा मु० कराड
१७ आचार्य श्री १००८ प्रताप सुरीजी आदेसणा ठे० पायधुनी गोडीजी नो उपासरो मुबई न० ३
१८ उपाध्याय महाराज श्री १००८ धर्मविजय आदेठाणा ६ ठे० जैन श्वेतांबर मुर्ति पूजक उपासरो (सौराष्ट्र) राजकोट
पाली थी महान आचार्योंने नवकार चउद पुरवनासार रथां पाच रग ना भेद रथां उपधान तप क्या थी कने करावीयो अगर कया थी चालेते स० २००७ सावण वद ५ ता. ७-८ ५१

पत्र लिखा

पांच आचार्योंके आये हुये उत्तर सैलाना म० मा० ता: १९८५१

पत्र न० १

माननीय

जैन श्वे० मु० संघ समस्त पाली

धर्मलाभ, विना ता० मिती का पत्र मिला वह मुनि श्री हंस विमलजी की उम-केरणी से लिखा गया है, एसा पिछले कार्ड से मालूम हुआ।

प्रश्न के उत्तर में है –

१ पंच परमेष्ठी के गुणों से चौदह पूर्व भरे हैं इससे उनका यह सार कहा है,

१ केवल ज्ञान के कारण अरिहन्त का सफेद रंगः

२ दिव्य प्रकाश मय आत्मा होने से सिद्धोंका लाल रंग,

३ स्वर्ण वत् निर्मल होने से आचार्य का पीला रंग।

४ वाचना से हृदय हरा करदेने के कारण उपाध्य का हरा रंग

५ उग्रतप के कारण तथा आतापना से शरीर पर श्यामत्व आजाने से साधुम काला रंगका ये सब औपचारिक कथन हैं

३ उपधान का खुलासा रामचन्द्र सूरिजी से पूछलेना

विशेष खुलासा रूबरू हो सकता है

शुभ अंग नी आनन्द सागर सूरी

पत्र नः २

श्रावण वदी ४ परमाराध्य पार सिद्धान्त महोदधी आचार्य देव श्री विजय प्रेम सुरीश्वरजी महाराज तरफ थी

सु श्रावको श्री पाली संघ जोग धर्मलाभ

तमारो पत्र मलेलो। नवकारना पाच परमेष्टीना स्वपर्याय अने पर पर्यायनों वर्णन ये चौद पूर्व तथा चौद पूर्वीने पण अत समये चौद पूर्वने बदले एना रहस्य भूत नवकारनुं स्मरण होय छे तेथी चौद पुर्वनो सार नवकार नव पदना पाच पदोना वर्ण अंगे श्री अरिहते घाती कर्म नो नास करी उज्वल ज्ञान दर्शन स्वात्मामा प्रगट कर्या छे पखे सफेद वर्ण, श्री सिद्ध भगवाने चक चकता निर्मल लाल धुम सुवर्ण नी जेम सर्व कर्म कचरो वाली नाख्यो छे ते थी लालवर्ण एम हेतु विचारी शकाय बाकी वर्ण तेने पदना ध्यान अर्थ छे

उपधान तपनुं विधान सारी रीते महानिशीथ सत्रमा छे ज्ञानाचारनों ए आचार पण छे'उपधाणे तह अ निन्हवणे'

धर्म साधनामा उजमाल रहेनु बीजा त्रीजा विकल्पो मां न उतरता महा उपकारी आपणा पूर्वाचार्यो ये आदरेला मार्गे खूब खूब उत्साह थी उद्यमवत रहेवु

ता मुनि भानु विजयना धर्मलाभ

सु श्रावक मास्टर जोग धर्मलाभ

पत्र न० ३

ओसवस स्थापक | सु० जोधपुर ता: सा० सु० सुद ६

रत्नप्रभसुरीश्वर पादकमलेभ्योनमः इतिहास प्रमी मुनिज्ञान
ओसवाल सुन्दर ठा० २
सवत २४०० श्रीमान श्री सघ समस्था मु. पाली

धर्मलाभ वचियेगा देव गुरुकी पूर्ण कृपासे अत्र कुशल तत्रऽस्तु आपका पत्र यथा समय मिल गया था। साथ की राह देखी न ठुकने से आज डाक द्वारा भेजा जारहा है, पहुचने पर पहुँच देना। धर्म कार्य में प्रयत्नशील रहना फक्त

देवगुप्तसूरी ॐ जोधपुर

धर्मलाभ। श्री सघ पाली

प्रश्न—श्री नवकार मत्र चौदह पूर्वका सार के विषय उत्तर—नव मत्रे मे अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु है। इनकी बराबरी करने वाला ससार भर मे कोई पदार्थ नहीं है। अत नवकार मत्रको चौदा पूर्व का सार कहना यथार्थ ही है। दूसरा चौदह पूर्व पढकर उसका सार मे अरिहतादि पद प्राप्त करता है उससे भी यही मतलब निकलता है कि नवकार मत्र चौदह पूर्वका सार है। प्रश्न—पाच पदोंके रगके विषय मे जिसका उत्तर पद और पद धारक यहां पदके लिये कहा जाता है कि पाच पदोंके रूप रग नहीं पर अरूपी है तथापि ध्यान करने वालो की सुविधा के लिये यथार्थ भाव से रूपकी कल्पना की गई है। जैसे सिद्धोंके रूप रग नहीं वे अरूपी होने पर भी उनकी मूर्ति स्थापना की जाती है। इसी प्रकार पाच पदोंकारगकी स्थापना की गई है—जैसे कि—

१ अरिहंत भगवान को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ यह उज्वल लोकालोक प्रकाश होने से अरिहंत का रंग उज्वल श्वेत वर्ण
२ सिद्ध-जीवके साथ तेजस कामर्ण शरीरका अनादि सम्बन्ध है। किसी गति जाति में जाते वे दोनों सरीर साथमें ही रहते हैं। पर जब चौदहवें गुणस्थान के अंतमें मोक्ष होने के समय तेजस कार्मण शरीर छुटके अलग होते हैं, तब जीवात्माके प्रदेश तपाया सोने की तरह होने की कल्पना कर सिद्धों का वर्ण लाल माना है।
३ आचार्य-शासन की जुम्मावारी आचार्य पर रहती है और प्रति वादी के साथ शास्त्रार्थ करने को हमेशा केसरीया कर तैयार रहते हैं, जैसे शूरवीर पुरुष संग्राम के लिये केसरिया करते हैं, इसलिये आचार्य का रंग पीत वर्ण का है।
४ उपाध्याय का कर्तव्य है कि वे द्वादशांग सूत्रों की स्वाध्याय करते वा उनकी आत्मा में ज्ञान की तरगें उठा करती है। जैसे समुद्र में जलकी तरगें (लहेरें) उठतीं हैं। वे तरगें हरा वर्णकी होतीं हैं। इसलिये उपाध्याय का हरा वर्णकी स्थापना की है-
५ साधु-साधु मोक्ष मार्ग की साधना के लिये तप करने में शूरवीर रहते हैं जैसे भट्टीपर कढाई चढाई जाती है तब वह श्यामवर्ण की हो जाती है। इसी प्रकार साधु पदका श्याम (काला)रंग स्थापन किया है-मैने ऐसा गुरू मुख से सुना है।
प्रश्न उपधानके विषय का उत्तर श्रावक उपधान तपकर यो सूत्र

अर्थ ग्रहन करे, ऐसा शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। पर वर्तमान जो उपधान चलता है इसके लिये मैने मेरी मान्यता आज से ३३ वर्ष पूर्व मेम्बर नामा में व्यक्त करदी थी वहा से आप देख सकते हैं।

आपको प्रश्नों का सक्षिप्त उत्तर लिखा है उमेद है आपको संतोष होगा पत्र पहुच देरावे स० २००७ सावण सुदी ७–

लि० मुनि हर्ष विमल० मेम्बर नामा तो हमारे वाचने नहीं मिला, लेकिन वो वाचने वाले तटस्थ श्रावक से पूछा गया था उसमें हाल के रीती के उपधान का संपूरण काट कीया हय–यही स० २००७ आसोज सुदी १५।

कागद कराडसे आया भेजनेवाले का नाम नहीं और पुरी मिती नहीं लेकीन यहां चातुर्मास आचार्य महाराज श्री लक्ष्मण सूरिजी का था उससे उन्हीं का ही निश्चय हुवा इनकी नकल नीचे दी है।

पत्र न० ४

पू० पा० आचार्य देवकी ओर से कराड व० १०

पाली श्री संघ समस्त योग्य धर्मलाभ साथे जणाववानु के तमारा बन्ने पत्र मल्याइता पुरतु जबाबमा ढील थई छे

१ श्री नवकार मंत्र ए चौद पूर्व नो सार छे० कारण के नवकार मत्र मां पांच परमेष्टि छे अने पच परमेष्टी ये चौद पूर्व नो सार छे। चौद पुर्वनु ज्ञान पाच परमेष्टि स्वरूप छे.

२ नवकार मत्र ना पाच पदो मां पांच रगो ये रगों आप से

ध्यान करवा माटे आरोपित छे जेमके अरिहंत देवमा शुकल ध्यान ये शुक्ल वर्ण, श्री सिद्धि मां रातो तेओ ज्ञान रूप अग्नि थी ध्यान अने तप थी कर्मने भस्मी भुत करी नाखे छे एटले लाल चोळ देखाय माटे रातो रग एवी रीते चालता आचार्यों आदि पदो पण समजी लेवा ।

३ उपधान तप अगाउ जुदी रीते चालता हता, अत्यारे जुदी रीते चाले छे। पूर्वाचार्यादि देश काल सघयण विगैरे जोई परिवर्तन कर्युं छे अने ते सौने मान्य छे। उपधान तप नो उल्लेख उत्तराध्ययन, महानिशिथ आदि सूत्रों मां छे आ परमाणे हुकाम समजी लेजो । धर्माराधनमां तत्पर रहो।

सौने धर्मलाभ दा० किर्तीविजय ना धर्मलाभ कवर पर पोस्टनी छाप रवाना ता. २५ सप्टेंबर ५१ पाली २८ सपेटेंबर ५१

पत्र न० ५

ॐ नमः श्री गढ सिवाणा से जिन रत्न सूरि उपाध्याय लब्धिमुनि गणि प्रेम मुनि आदि गणा ■ तत्र पाली मारवाड मध्ये श्रावक भंडारी हागा सुमेरचदजी अमोलखचदजी पारसमलजी सुराणा भडारी नेमीचद आदि सघ समस्त जोग धर्मलाभ निवेदन पूर्वक मालुम हो कि आपने ३ प्रश्न भेजे हैं। जिनका उत्तर विस्तार तो सन्मुख हो सकता है । पत्रमे तो नाम मात्र लिखा जाता है। सो हमने गुरु मुख सुणा और वाचने आया हुवा वर्तमान हमारी समरण शक्ति अनुसार लिख भेजा

है २००८ श्रा० सु० १ शनि दा खुदमच श्रावकों से धर्मलाम मालुम हो—

१ नौकार के चौद पुर्वनो सार किस तरेसे ? चौदे पुर्वघरोजे ये नौकार ने अंत सयभु मन्या ते निगोद मा गया। आचार्य पण अत समये नौकारसु तर्या छे, उपाध्याय पण ये नौकार समरने से तर्या छे, साधु मर्ग अढी द्वीप मां है सो नौकार तरेंगे और देशवरति सब ममकित धारी नौकार मत्रके स्मरण से अते आराधक कहे हैं। तिर्यंच पण अत समये नौकार सुणने से सद्गती गये हैं वास्ते यह हय—चौद पुर्वका सार है महा मत्र

२ प्रश्न नौकार के पांच पदोंका रग न्यारा २ क्यु ? आराधक जीवों के सुलभता लीये अरिहत शुकल ध्यान से केवल ज्ञान प्राप्त कीया वास्ते श्वेत वर्ण कहा है।

सिद्धके जीवोंने कर्म इधन जला दिये लाल अगर समान लालवर्ण आचार्योंने कर्मशत्रु जितने के केशरिया किया [illegible] पीतवर्ण उपाध्यायने पढनेवाले साधु समुदाय एक बगीचा रूपको। ज्ञान जल सिंचने से हरा बनाते है। ४ हर्यावर्ण है।

साधु सर्व मोक्ष को साधते तपस्या से कर्म को कोलसे कर दिये श्यामवर्ण साधुका यह सब अपेक्षीक है। साधकजी के सुलभता के लिये।

३ प्रश्न उपधान तपकी शकाका उत्तर। २४ तीर्थङ्कर में से आदि तीर्थङ्कर चरम तीर्थङ्कर के समयके जीवोंको विशेष क्रिया निवेदन करी है। सो कल्प सूत्रमें अधिकार आता है। सप्रति

महावीर का शासन है। महावीर की मोजुदीमें श्रावको में १६ बारा व्रतधारी ११ पडीमाधारी थे, सो उपासकदशाग सूत्र से जाण लेणा महावीर मोक्ष गये बाद द्वादश अग फरमावे है जिसमें साधु साध्वी जोग वहन करके सूत्र शिखे श्रावक उपधान तप करके आवश्यक ६ प्रतिक्रमण करे तो यथार्थ आराधक होता है। उपधान अधिकार महानिशीथ सूत्रमें है, विवरण नौकार का उपधान में ५ पद की वाचना अठम तप उपर आंबील ८२ हुये बाद नौकार के पाच पद गुरुमुख से सिखे, लारला ४ पद ऐक अठम ५ आवल करे बाद गुरु वाचना देते है। सप्रति सघयण बल कम होने गीतार्थ पूर्वाचार्यों ने सुख उपधान वाल वृद्ध कर सके वास्ते एकातरीया दश उपधास दश एकाशणा कहा है। १२॥ उपवास अर्तिकरे जद नौकार का उपधान होता है।

पत्र न० ६

मु० खीमाणुनी थी पन्यास मगल विजयजी

फोसीलाव मध्ये देवगुरू भक्ति कारक पुण्य प्रभावक श्री सघ समस्त धर्मलाभ साथे तमारे रजीस्टर पत्र मल्यो प्रश्न प्रश्नो जवाब मगाव्यो जेमा उपधान कार्य अगे समय विना विस्तार थी न लखता सक्षेप मां जणावनु जे सिद्धचक्र ना वर्णो सबध मा जणावानु जे अर्हंत प्रभु ना असख्य आत्म प्रदेश मोहमल विनाना उज्जवल होवा ना हेतु थी सिद्ध प्रभु ज्योति स्वरूप होवा थी लाल आचार्य प्रभु कचन जेवा कसोटी मां

तेनस्वी होवा थी पीला उपाध्याय जी नो आगम नो वगीचो लीलोछम ताजो होवा थी हरितवर्ण अने मुनिराज मेघजेवा जगतना ताप ने शमावनार होई श्याम मेघ भूमी विगेरे गुण हेतु भावना माटे आलबन करवा तथा दर्शन ज्ञानादि गुणों पाप कर्म मेल नी शुद्धिकरी आत्म नी उज्जलता करे छे।

नवकार मंत्र चौद पूरव नो सार मा वधार जोवाने नवकार महात्म्य नु पुस्तक मुनि श्री भद्रंकर विजयजी ये बहार पाडेल जोवा थी घणु जाणवानु मलशे ढवा दुकाण मां जणावानु चौद पूरवनो सार मात्र छे अने ते नवे पद मां भरपुर छे जेम सूर्यना प्रकाश मा वधा प्रकाश समाय तेम नवकार नो प्रभाव मोक्ष साधन मां छे। जे चौद पूरवीओ पण अण सण मां नवकार नुज ध्यान करे छे। उपधान सम्बन्ध मां जाणवानु जे आणद काम देवादि श्रवकों ना चरित्र पुरे पुरा आगम अभावे मात्र अमुक वीना उपामकदशांग मा वर्ण वेल छ। हाल मारी पामा न होवा थी बीजा पाठो आगम नालखी सकतो न थी पण आगमो जेने मान्य छे तेने महा नीशीथ सूत्र विगेरे मा उपधान माटे श्रावकों ने अने योग बहन माटे मुनियो घणा आगमों मां मले छे तथा अतिचार नी आठ गाथा ना काउसग मां काले 'विणये बहुमाणे उवहाणे तहय निण्हवणे' आवश्यक नो सूत्र नो पाठ भर-मीरुमाटे अमूल्य छे।पुण्य प्रकाश मां ''मणी ये वही उपधान'' आवा अनेक प्रमाणे तथा उपधान विधि मां प्राचीन प्रणाली का केवल आंबिल उपवास नी हती ते

सघगणादि हेतु थी सघे हाल नी चालु विधि आचरेली पूर्व परपरा गत आगम मान्यज छे तेमा शका करवानु भवभीरू ने शु होय, अटेले महावीर देवे कृपा श्रावकों ने व्रतअने पडीमानी जेम उपधान ना प्रमाणो नो प्रश्न चरित्रानुवाद करता आगम वाद बलवान छे ते जाणशो वीशेष खुलाशो रूबरू थइ शके छे।

दुन्दुभि न० ७–A

नमस्कार महा मंत्रनु रोज प्रातः काले अेकाग्रचित्ते स्मरण करो

(ले० पू० श्री भद्रकर विजय जी महाराज)

जैन मात्र नु एक विशेषण 'श्री पच परमेष्टी महा मत्र स्मारक' तरीकेनु शास्त्रकारो ये आपेल छे। प्रत्येक जैन पछी ते बाल हो वृद्ध हो, या युवान हो, राजा हो, रक हो, या श्रीमत पुत्र हो, विद्वान हो, पडित हो,या अपडित हो, साधु हो,गृहस्थ हो, या सम्यगद्दष्टि हो–हरेके हरेक श्री नवकार महामत्र नु स्मरण करवा बधायेल छ। अघन्य थी ते पोता ना आला कर्तव्यने पण अदा न करे, तो तेनु जैनत्व टकी सकतु नथी। तेनु कारण स्पष्ट छे। जैनत्व अे श्री मताई पडिताई के अमीज पीजी कोई लौकिक ऋद्धि सिद्धि साथे सबध धरावतु नथी। जैनत्व ने सबध से आत्मिक ऋद्धि साथे आत्मिक सिद्धि साथे अेवी आत्मिक ऋद्धि, आत्मिक सिद्धि अने

आत्मिक समृद्धि थी भरपूर श्री पंच परमेष्ठिओ प्रत्येनो आदर ये जैनत्वनी रक्षानु आवश्यक अंग छे। श्री पंचपरमेष्ठिओनु विस्मरण अने अनादर अथवा श्री पंचपरमेष्ठिओनु विस्मरण उपेक्षा के अनादर ये जैनत्वनु ज विस्मरण उपेक्षा अने अनादर छे। श्री पंच परमेष्ठि नमस्कार ने शास्त्रकारोओ चौद पूर्वनो सार कह्यो छे। तेनु कारण ये नमस्कार सकल धर्म नो बीज छे। बीज विना अंकुर के वृक्षनो आशा जेम व्यर्थ छे, तेम आत्म ऋध्यिना स्वामी ऐवा परमेष्ठि ओना नमस्कार रुपी बीज विना तत्त्व चिंता रूपी अंकुर के धर्म सेवन रूपी बीजनु वृक्ष अने तेना स्वर्गापवर्ग रूपी फलनी आशा शाशरी बन्ध्य छे। परमेष्ठिओना नमस्कार हृदय रूपी भूमिमा सद्धर्म रूपी बीजनु वपन करे छे अने विधिपूर्वक वपन करायेलां ओ बीजमां श्री सद्धर्म नी वृद्धि ना हेतुभूत तत्वचिंतादि अंकुराओ तथा सम्यक्त्व अणुव्रत अने महाव्रतो ना सेवन रूपी धर्म वृक्षनी शाखा प्रशाखाओ तैयार थाय छे। अने तेमां थी देवगति अने मनुष्य गतिना सुखो नी परंपरा बड़े अक्षय अने अव्या-बाध ऐवा सिद्धि पदनी प्राप्ति थाय छे माटे जैन शासन मां 'नमस्कार' ओ महामंत्र छ। सर्व प्रकार ना सुखो नो वशीकरण छे आत्मिक वैभवना अभिलाषुकोनी कामधेनु जैनत्वनी रक्षा अने विकासना प्राण समान 'नमस्कार' नुं रोज प्रातः काले ऐकाग्र चित्ते स्मरण करवा नो अभ्यास आत्मिक उन्नति नु अमोघ कारण बने छे। माटे प्रत्येक जैन आजथीज तेनो मोटी

भक्ति पूर्वक आदर करजो जोइअे ।

पु० न० ८-A

श्री स्वस्ती श्री पार्श्व जिन प्रणम्य श्री स्थाने सकल गुण निधान एक अरिहतनि आज्ञापालक दुविधि धर्म प्ररुपक त्रण वेदना जिपक चतुर गती निकारक पच महाव्रत पाळक शात दांत महंत मुनिमहाराज आचार्य श्री सूरि जोग श्री पोसाली-था वासुलीखी श्रावक नी वंदना १००८ स्विकारशो जी उपरंच लखवानु के आप पजोशण कई तिथि ने क्या वारना करता धारो छो स्याश्री नवपदजी अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय साधु दरेक ना जुदा रग होवानी सु कारण छे तेज लखना कृपा करशो, तीर्थंकरों ना रग तो तेना जन्म ना वखते ना थाय छ । परंतु आ पद तो अनादिकाल थी छ तो तेमा अनेक रग ना जन्मी गया होय तो पछी एकज रग नो सु कारण छे । ते लखना कृपा करशो, निजु देरासरमा प्रभुनी मुल नायजी नी दृष्टी एमना दरवाजा ना केटला भागमा केटलामे मागे आवदी जोइये ते पण कृपा करिने लखवा कृपा करशो सवत २००५ ना श्रावण वदी वार । इम तरहसे ३० आचार्य महाराजों को (कवर) पत्रों नीचे लिखे पते पर दिये और जिस तारीख को दिये उसकी नोंध

१ मुनी महाराज श्री १००८ पन्यास जी श्री रग विजय जी स्थां कनक विमलजी भामा नोपाडो जैन उपाश्रय ता: २३ ८ ४८

२ मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री प्रताप सुरीजी

ठे जैन श्वेताम्बर उपाश्रय (गुजराती) बड़ोदरा ता २३ ८ ४८
३ श्री मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री लब्धीसुरी जी महाराज ठे० लशकरमा पुना ता. २३ ८-४८
४ मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री लक्ष्मण सुरीजी जैन उपाश्रय मु दादर मुंबाई ता २३-८-४८
५ मुनी महाराज श्री १००८ श्री यतिन्द्र सुरीजी महाराज जैन उपाश्रय स्टेट पालन पुर ता २३ ८-४८
६ मुनी महाराज श्री १००८ कल्याण विजय जी, सौभाग्य-विजय जी ठे जैन उपाश्रय जालोर ता २३-८-४८
७ यति वर्य पंडीत श्री राजविजय मु० गुढा बालोतरा मारवाड ता २३-८-४८
८ यति वर्य पंडीत श्री लक्ष्मी सागर जी मु० खारसी (मारवाड) ता २३ ८-४८
९ यति वर्य पंडीत श्री प्रमोद रतन जी मु० नाडोल (मारवाड) ता २३-८ ४८
१० यती वर्य पंडीत श्री कानमल गुरा मु० चाणोद (मारवाड) ता २३-८ ४८
११ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ श्री हरीसागर सुरीजी ठे जैन उपाश्रय कोटा राजपुताना ता २४ ९ ४८
१२ मुनी महाराज श्री १००८ आचार्य श्री इंद्रविजय सूरीश्वर जी मु० देहली कलौथमील कवांटर न० २ डी० टाउन देहली पंजाब ता: २४ ९ ४८ को भेजा।

१३ मुनी महाराजजी श्री आचार्य श्री १००८श्री महेन्द्र सुरीजी ठे पादरली जैन उपायश्र ता: ११-८ ४८

१४ मुनी महाराज श्री आचार्य श्री १००८ श्री ठे० तरतगड जैन उपाश्रय ता. ११ = ४८,

१५ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, हीमाचलसूरीजी वडगाम थाया शीवगज ता: ११ = ४८

१६ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ कल्याण सूरीजी महाराज-पायधुनी श्री आदेश्वरजी धरमशाला ता: १२ = ४८

१७ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, वल्लभसुरी जी ठे० बीकानेर जैन उपाश्रय ता. १३ ८-४८

१८ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, देवगुप्त सूरीजी ठे० जोधपुर ता: १३ ८ ४८

१९ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, रामचंद्र सूरीजी ठ० फच्छ माडवी ता. १३ ८ ४८

२० मु०महाराज आचार्य श्री १००८ ,, प्रेमसुरीजी ठे० रजमात जैन उपाश्रय ता' १३-८-४८

२१ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ,, नेमीसुरीजी ठे० वढवाण जैन उपाश्रय काठीयावाढ ता. १३ = ४८

२२ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ,, सागरानद सूरीजी ठे' सुरत जैन उपाश्रय ता १३-८-४८

२३ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ललीत सुरिजी आतमा नद सभा, भावनगर ता' ३० ९ ४८

२४ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ कीर्ती सागर सुरिजी ठे' पायधुनी गोडीजी नो उपाश्रय मुबई   ता: ३० ६-४८
२५ मु० महाराज श्री १००८ ,, दर्शन विजयजी आदीसणा मु० मेशाणा   ता ३० ३० ६-४८
२६ मु० महाराज श्री १००८ ,, पन्यास जी पुण्यनन्द विजय आदीमणा ॥ पींडवाला   ता' ३० ९-४८
२७ मु: महाराज श्री १००८ ,, व्याख्या चारित्ररूपजी कपुर विजय जी ठे: जैन उपासरा लाठारा   ता' ३०-९-४८
२८ मु' महाराज श्री १००८ ,, आचार्य श्री तीर्थेद सुरीजी घाकरा मारवाड जे० आ०   ता: ३०-९ ४८
२९ मु० महाराज श्री विद्या विजयजी शीवपुरी समाधी मदीर स्टेट गवालीयर   ता' ३० ६-४८
३० मु० महाराज श्री १००८ ,, पन्यासजी श्री वीकास विजय जी आदी ठाणा २ ठ जन मदीरवाल मुर्ती पुजक साधुयों का उपासग मलेर कोटला/पंजाब   ता ३०-६ ४८
जेना जवाबो न आव्या तेमाथी तेमने फरीथी कारट लख्या तेनो नोंध
१ मु. महाराज श्री १००८ आचार्य श्री वल्लभ सुरीजी आदी ठाणा ठी राम पुरीया जैन भुवन समुदाय बीकानेर
२ मु' महाराज श्री १००८ आचार्य श्री कीर्ती सागर सुरीजी जोग ठे पायधुनी गोडीजी नो उपाश्रय मुबाई
३ मु: महाराज श्री १००८ आचार्य श्री नेमीसुरीजी

४ मु० महाराज श्री १००८ पन्यासजी श्री पुर्णानंद विजय तथा विनय विजय आदीठाणा टे० जैन धर्मशाला पींडवाडी
५ मु० महाराज श्री १००८ आचार्य श्री ललीत-सूरीजी आदी ठाणा आत्मानन्द सभा भावनगर

पाच कारट में से आचार्य श्री ललीत सूरीका कारट आया। पण खुलासा,वार जवाब नहीं सब मिलकर २४ पत्र कारट आये सो आगे दिये जाते हैं।

पत्र नं० १

ॐ

शनीवार मु० चाकरा

स्वस्ति श्री पच महाजन समस्त मु० पोसालीया जोग लि चाकरा से तुम्हारा पत्र आया आचार्य गुरूदेव व मुनि मण्डल सुख साता तुम्हारे प्रश्न निचे मुजब है, अरिहत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु इनका रग जुदा २ पच परमेष्टी पाच तत्व का बीजक रूप पाच रग है पांच रग कल्पना मात्र है न आचार्य पिला है न उपाध्याय हरा है न साधु काला है। ध्यानालम्बियों के लिये पाच तत्वों की उपासना के वास्ते पाच रग की कल्पना है। विशेष खुलासा करना हो तो रूबरू मिलेंगे तब होगा जिन मन्दिर द्वार के आठा हिस्सा कीया जाय सात भाग के सातमा सात भाग करना सातमें भागे दृष्टी आवे आठमा भाग उपर छोडदेना विशेष पुछना हो तो सोमपुरा से पुछना यहां सब सुख सात मे विराजमान है।

लि० मुनि कमले विजय मु० चाकरा जालौर परगना।

—:०—

आदेश्वर जी धरम शालामे आचार्य श्री मु० मुबई पायाधुनी कल्याण सुरिजी को चिट्ठी दी गई थी उनका उत्तर

आदेश्वर जी की धर्मशाला

पत्र नं० २

पोसालीया मध्ये देवगुरू भक्ति कारक श्री सघ समस्त धर्मलाभ पूर्वक मालुम थाय तमारो पत्र आव्यो वांची समाचार जान्या।

बीजु आवती सवत्सरी पर्व मगलवार भादरवा सुद ४ ना रोजकरवानी, श्रावण वद १२ मगल रोज थी पर्युषण पर्व नी सरुयात, भादवा सुद१ शनीवार ना रोज जन्म जाणवा

बीजु नव पदोंना रगों शरीर आश्री नथी। परतु कर्मवार ना अगे मानना साधु पदमां कर्मो विशेष होवा थी श्याम रग बतावेला, जेम जेम आत्मा अगाडी बधे छे तेम तेम रगों फरे छे। अरिहत चार घाती कर्मो नो नाश करेल अने केवल ज्ञान मेलावे त्या रग सफेद बतावेल छे तेवी रीते हरेक ना कर्मों घटता जाय तेम रग फरता जाय।

बीजु वर्तमान काले दष्टिनों विषय मीरजीने पूछी बग बर विकास करवना भलामण दष्टिना विषयमां भेद होवा थी लखाय छे, छेवटे त्रीजा भागे लेवाजो/सर्व सघने धर्मलाभ त्या मुनि कोण चातुर्मास छे ते लखशो मी शुद १४ बुधवार ली० पोते तखतगढ मा जैनाचार्य विजय हर्ष सुरीश्वर जी महाराज बीराज मान छे तो तेओने पुछवा महेरबानी कर शो।

श्री रत्नप्रभसुरीश्वर

उ० श्रा० देवगुप्त सुरी मु० जोधपुर

पत्र न० २

श्रीमान सकल श्री संघ मु० पोमालीया

धर्मलाभ वंचियेगा। यत्र कुशल तत्रास्तु। वि आपका पत्र आज मिला समाचार ज्ञात हुए

१ प्रश्नोंके उत्तर हम पर्युषण भाद्रवा शुद्ध ४ मंगलवार को करेंगे

२ पच पदोंका रग की यथार्थ कल्पना इस मुजब है। १ सिद्ध का लाल रग सिद्धोंके भूतकाल में तेजस और कारमाण शरीर साथ में रहा है अत: मोक्ष जाते समय वे अनादिकाल के तेजस कारमण शरीर छूटते समय आत्मा के प्रदेश तेजी होने से रग लाल आता है। अरिहंत का सुपेद रग-अरिहंत चार घाती कर्मोंका चयकर आत्मा प्रदेशों को निर्मल बना दिये इसलिये उनका सुपेद वर्ण माना है।

३ आचार्य-वादी प्रतिवादी से शास्त्रार्थ करने को केसरिया करने से नीला वर्ण माना है।

४ उपाध्याय द्वादशांग रूपी समुद्र में स्वाध्याय रूपी लहरों में मस्त रहने से नीला वर्ण माना है।

५ साधु-तप रूपी कड़ाई पर अपना शरीर को तपा रहे इससे श्याम वर्ण माना है इसप्रकार पाचो पदोंके पाच वर्ण माना है।

मंदिर का दरवाजे के ६४ भाग करले उसमें ५५ भाग नीचे छोड के प्रभुकी दृष्टि रहनी चाहिये इस विषयमें आचार्यों

के कई मत हैं ॥॥ उपरोक्त मत प्रायः सर्व सम्मत है।

धर्म कार्य विशेष रूपसे करते रहना सबको धर्मलाभ

पत्र नं ४

पोसालीया श्री सघ समस्त पर्युषण पर्व प्रथम का लिखा हुआ बिना मितिका पत्र वदी १ को मिला।

महा पुरुषों की स्वाभाविक वैसी ही कातिप्रभा होती है, फिर भी आराधना करने वाले को अनुकूलता के लिये रग बताया,

मंदिर जी सबन्धी तुमारे यहा बोलता वास्तुसार ग्रन्थ है जिमको तुमने चोमासा रक्खा है उनको पुछ सकते हो

लि० कपुर वि० का धर्मलाभ।

श्री द्विपायन ऋषीजी महाराज आप पोसालीया को लाभ देते हो, बडा अच्छा समयानुकुल श्री पर्युषण पर्वकी आराधना हुई है सब जीवों को खमाया है, जिसम आपका समावेश होता है,

लि० कपुर वि० ठा० का बन्दना ऽनु बन्दना सुखसाता स्वमत खामण सुदि ३ मगल लाठारा।

सब को नामवर सस्नेह धर्मलाभ।

पत्र नं ५ जैन ज्ञान मंदिर दादर

पूज्यपाद आचार्य देव श्रीमद विजय लक्ष्मण सूरीश्वरजी महाराज की तरफ से श्री सघ समस्त योग्य धर्मलाभ के साथ लिखनेका कि पत्र मिला।

१ पर्यूपण पर्व श्रावण वद-१२ मंगलवार को शुरू होगा। भद्रवा सुद ४ मंगलवार को संवत्सरी होगी बीचमें कोई तिथि घटवध नहीं है।

२ नव पद जी ना पदो अनादिना छे ते बराबर पण एना रंगो गुणने आश्रयी छे शरीर ने आश्रयी नथी।

अरिहंत घोणा रंगना अेटले बधा थी उच्च छे माटे सफेद निर्मल ज्ञान दर्शन तेथी पण सफेद। सिद्धलाल केम-कारण के धर्म मा लीन थाय त्यारे कर्म बले जेम सोनुतपे त्यारे लाल चोल थाय तेम सिद्धो ये कर्म बाल्या अेटले लाल,

आचार्य पीला होय सुवर्ण जेम किंमती वस्तु छे ने ते पीलु छे ने ते पीलु छे तेमी आचार्य किमती छे ऊंचा छे माटे पीला तेनी रीते गुण प्रमाणे रंग समजवा

४ श्री जिनेश्वर भगवान नी दृष्टि शाश्वत मूल गभारा ना दरवाजे तेजा आठ भाग करवा अने नीचे थी लई उपरना सातमा भाग मा दृष्टि आवे अे सातमा भागना पाछा आठ भाग करवाते नीचे थी लई सातमां भागे भगवान नी दृष्टि जोइये मतलब के-दरवाजा ना ८×८=६४ भाग करवा। नीचे थी लई उपरना पचावन मां भागे भगवान नी दृष्टि आवती जोइये धर्मा-राधनमा सदा तत्पर रहो सौ ने० धर्मलाभ

द' कीर्ति वि० ना धर्मलाभ

पत्र नं ६

खंभात श्रवण सुद १३

सिद्धांत महोदधि चारित्र चुडामणि आचार्य श्री मद विजय आचार्य श्री मद विजय प्रेमसूरीश्वर जी महाराज तरफ थी पोसालीया जैन श्वेताम्बर संघ योग धर्मलाभ साथे लखवानु के तमारो पत्र मल्यो तमो पुछेला त्रण प्रश्नोना उत्तर निचे मुजब आपीये छीअे ।

१ संवत्सरीनी आराधना आवर्षे भादरवा सुद ४ मंगलवार ना दीवसे अमो करवाना छीअे आ० वि० श्री नेमि सू० प्र० वि० श्री हर्ष सू० आ० वि० वल्लभ सू० आदि आचार्यों मंगल वारे संवत्सरी नी आराधना करवाना छे तेम तपा गच्छ संघ लगभग मंगलवार नी संवत्सरी करवाना छे मंगलवार नी संवत्सरी शास्त्र अने परंपरा सिद्ध छे ।

२ अरिहंत सिद्धादि पदोना सफेद लाल आदि वर्णो ज्ञानीओअे नियत करेला छे तेनु कारण अे छे के मोक्ष कामी आत्माओ ना ध्यान करवा माटे नियत थयेला छे । छद्मस्थ आत्माओं ध्यान सालम्बन होय छे अने वर्ण विना ध्यान छद्मस्थ आत्मा करी सकता नथी माटे नियत वर्णो छे ।

३ मूल नायक भगवान नी दृष्टि द्वारना आठ भाग करवा तेमाथी नीचेना ६ भाग अने उपरनो १ भाग छोडी देवो बाकी रहेलो जे सातमो भाग अेना आठ भाग करवा तेमा थी निचेना छ भाग छोडी देवा अने उपर नो १ भाग छोडी देवो, बाकी रहेला सात मा भाग मा प्रभुनी दृष्टि आवनी जोइअे । अत्रे सुख शाता मा छे । धर्मनी आराधना करशो लि० मुनि पुण्योदय विजय ।

पत्र न० ७

साधा पीर स्ट्रीट जैन मंदिर न० ६५७ मु० पुना केम्प (जी०आइ० पी० रेल्वे) श्रा० १-९ परम पूज्य आराध्यपाद गुण रत्न महोदधि आचार्य देव श्रीमद् विजय लब्धिसूरीश्वरजी महाराज जी परम पुनीत आज्ञा थीं ।

पोसालीया मध्ये देवगुरू भक्ति कारक सु श्रावक शा० मीठालाल जी अदाजीशा पन्नालाल जी रामजी शा० बाबुलालजी भीराजी शा० गणेशमल जी गुलाबजी आदि श्री पोसालीया जैन संघ समस्त योग्य धर्मलाभ साथ मालम थायके देवगुरू पसाये सुखशाता छे तमारो पत्र मल्यो वांची समाचार थणया ।

वि० सं० २००४ ना श्रावण वद १२ मंगलवार ता: ३१-८-४८ थी श्री पर्युषण पर्वनी शरूआत अने भादरवा शुद ४ मंगलवार ७-९-४८ ना सवंत्सरी प्रतिक्रमण आ मुजब अहिंनो संघ अने हमो आराधना करवाना छे । तेमज जैन समाज ना घणज सर्वो आ मुजब पर्युषण पर्व करवाना छे।

प्रभुजी ना गभारा ना द्वार नी ऊचाईना आठ भाग करवा, उपरनो अेक भाग छोडवो सातमा भागमां आठ भाग करी उपर नो अेक भाग छोडवो सात भागमा सातमें भागे प्रभु जी नी दृष्टि राखवी

अरिहन्त पद सउथी उत्तम छे अने ऊंचु छे ते थी उत्तम अने ऊंचो रंग सफेद कहेवाय छे । ते थी ते पद नो रंग सफेद शक्यो छे बाकी आ चोवीशी मां सर्व तीर्थंकरों एक वर्ण ना

नथी एक तीर्थङ्कर नो वर्ण नहीं पण अनादि अरिहत नो वर्ण-श्वेत सफेद कह्यो छे अने ते कारण सर्वोत्तमता बतावया माटे आ एक कल्पना छे। बीजा पदे सिद्ध भगवान कहेवाय ते ते अरुपी तेनो तेनो रूप रग होयज नहीं छताय, आलबन विनाय ध्यान थई शकेन माटे बीजापद तरीके लाल रग आपणाणु आपवा मुक्यो छे। त्रीजो पद आचार्य पद छे ते तेमाथी उतरतु छे, जेटला माटे श्वेत अने लाल थी उत्तरतो रग पीलो रग छे अे पदनी स्थापना छे। बाकी आचार्यो जुदा-जुदा रग ना होय पण पद से जुदा पाडवा, त्रीजा नबर ना रग थी ओण खाण आपी। उपाध्याय चोथु पद ते थी उतरतो होवा थी तेमने नीलो रग मां मुक्या। मुनि तेना थी उत्तरता होवा थी श्याम रग मां मुक्या। आसिवाय बीजी कई कारण नथी। दर्शन, ज्ञान, चारित्र अने तप जे आत्मा ना उज्जवल गुणे होवा थी ये पारनो उज्जवल रग मा स्थापना करी कारण के ते गुणो तो अरुपी छे। धर्मसाधन मा उद्यम राखेजी

द: नेम विजय ना धर्मलाभ

पत्र नं० ८ लेवा ता: २७-८-४८

श्रावक देव गुरू भक्ति कारक जैन सघ श्री पोसालिया सिरोही धर्मलाभ के बाद मालुम हो कि पत्र मिला वृत्तान्त जाना आपके प्रश्नों के उत्तर नीचे मुजब है।

१ हम पर्यूषण का आरभ भाद्रवा वदी १२ मगलवार को करेंगे और भाद्रवा सुदी ४ मगलवार को पर्यूषण का सावत्सारिक

एवं प्रतिष्ठा आदि करेंगे। आचार्य श्री विजय सिद्धि सूरीजी श्री नेमि सूरिजी, श्री वल्लभ सूरिजी, श्री लब्धि सूरिजी, श्री प्रेम सूरिजी मार्गगामी आचार्य महाराज इसी प्रकार करेंगे। सागरानन्द सूरिजी और उनके द्वारा प्रसिद्ध साधु गोठवाड़ की सम्मति करेंगे।

२ जैन परमेष्ठी के रंगों के विषयमें खुलासा यह है कि मंत्रानुष्ठान में आराध्यदेव का ध्यान करने में उनके रंगकी खास आवश्यकता मानी गई है। जब परमेष्ठी पदों से नव पद यंत्र का निर्माण और उसकी आराधना अनुष्ठान की चर्चा चली तब इन पदों के रंग की आवश्यकता उपस्थित हुई और प्रत्येक पदके रंगकी कल्पना की गई। शुक्ल ध्यान की प्रधानतासे अरिहन्त का रंग श्वेत, ध्यान से कर्मेन्धन जलाने की कल्पना से सिद्धका रंग लाल, राज्य स्थानीय मन्त्रके समानकी कल्पना से आचार्य का रंग पीत (पीला) आचार्य के नीचे और साधु पद के ऊपर की स्थिति होने से उपाध्याय का रंग नील तथा कृष्णके विरला नील और साधु तपो परी होने से रंग कृष्ण माना गया है।

दर्शन, ज्ञानादि पद धर्म स्वरूप होने से इनका उज्ज्वल रंग माना गया है। इन रंगोंका खास उपयोग ध्यान में है अन्यत्र नहीं।

३ मूल नायक की दृष्टि द्वारके ६४ भाग करके उनको नीचे से ऊपर की तरफ गिनते ५५ वे भागमें मूल नायक की दृष्टि

आये उम हिसाब से भगवान को गद्दीपर विराजमान करना चाहिये। कल्याण विनय

पत्र न० ९ भादवी सुद १४

देवगुरू भक्ति कारक पोसालीया श्रीसघ योग धर्मलाभ १० ८-४८ नो पत्र मल्यो,

१ श्रावण वद १२ने मगलवार थी श्री पर्युषण पर्वनी शरूआत थाय छे अने भादरवा सुद ४ ने मगलवार ना दिवसे सवत्सरी पर्वनी आराधना छे।

२ नव पद ना वर्णनों विधि निभाग वार ओलख माटे छे।

३ द्वारना ६४ भाग करवा अने अेपाना ५५ मा भाग उपर दृष्टि होवी जोइये अने धर्मनी आराधना मां अविरत उजमाण रहोजी अेजो एक नी एक शुभाभिलाषा।

पाछल नो भाग तमारे त्यां रहेल मुनिराज ने वचावशो।

मुनी श्री हर्षविमल जी जोग अनुवन्दनादि पत्र मल्यो अमि शास्त्र अने शुद्ध परपरा सिद्ध थाती नाम माटे देवनी आराधना अने अनी जाहेरात लाभदायी नथी। तमे पर्युषणनी आराधनामा सन्मार्गे छो जाणत आनन्द। प्रभु ध्याननी आरा-धनामां लीन रही आत्म श्रेय साधो एक अेना शुभाभिलाष उपर नो कागद आ० श्री रामचन्द्र सूरिनो कच्छ मांडवी थी आव्यो।

पत्र नं० १० श्री।

श्री श्वेताम्बर जैन सघ-पोसालिया। धर्मलाभ आपका ता: २१ ८-४८ का लिखा हुआ कवर मिला समाचार मालूम

हुए आपके लिखे सवालों का खुलाशा इस प्रकार है।
१ हम और हमारा साधु साध्वी मंडल तथा संघ पर्यूषण पर्व भा०व० १२ मंगलवार को प्रारंभ तथा भाद्रवा सुदि ४ मंगलवार को संवत्सरी करेंगे। पंचमी का क्षय न मानकर हमारी परंपरानुसार छठका क्षय माना जायगा।
२ नवपद का रंग साधक की भावना को लक्ष्य में रखकर कायम किया गया है। आजके वैज्ञानिकों ने उच्चतम विचारों का वर्णलाल माना है और उनसे नीचे कोटी के विचारों का वर्ण श्वेत माना है। आत्मा के गुण शुक्ल ध्यान मय होने से अरिहंतादि पदों का वर्ण श्वेत, कर्मेन्धनों को भस्म करने में अग्नि के समान होने से सिद्ध पदका वर्ण लाल, प्रखर बुद्धिवाद की दृष्टि से आचार्य पद का वर्ण पीला, सुखे हुए वन को पल्लवित करने में मेघकी उपमा धारण करने से उपाध्याय पद का वर्ण पीला और साधक अभ्यास कोटि पर आरूढ होने के कारण स्थविर तथा साधुपदका वर्ण काला मान लिया गया है। यह कल्पना ध्यान के मानसिक भावों पर निर्भर है। और नव पदके समान यह वर्ण कल्पना भी सदा कालीन है।
३ जिनालय के मुख्य द्वार के आठ भाग करना और उपर का आठवा भाग छोडकर उसके नीचेके सातवें भागके फिर आठ भाग करना, उसके उपर का आठवा छोडकर सातवें भागमें मूल नायक प्रतिमाजी की दृष्टि रखना एसा फेरू कृत वास्तुसार प्रकरण में लिखा है।

—१०—

साधु मडल सहित हम यहाँ पर सुख शाता में हैं, पोमा निया के समस्त श्रावकों को व श्राविकाओं को धर्मलाभ कहसी। शुभमिति।   यतीन्द्रसूरि का धर्मलाभ
थराद ताः २६-८-४८

पत्र नं० ११   श्री

श्री थांदो दया गुरा कान्‌चदली श्री पोमालीया नयरे सु श्रावक पुन्य प्रभावीक देव गुर भक्ति कारक सरकार मत्र मबारक श्री सघ समस्त योग्य हमारो प्रीती पूर्वक धर्मलाभ वचसी श्री सघरो पत्र मिलीयो वो मबाक श्री पजुसण परव संवत्सरी भाद्रवा सुद ४ मगलवार ताः ७-९-४८ के राजू करेंगे।) भगवान की दृष्टी मीलान को लीकीय सो बारवा रा भाग ८ करके सात भाग मोड़देणा अेक भाग ।। देकया सीधचक्र जी का दरेक पद में जुदे जुदे रग बताया है वरण माफे। रग फेर मोठा आमारीय सु तपास कराई लीराने मठा मरू कोमकाज लीको देन दरसण को याद्करवसी सरव श्रावकों ने गरवाल गोपाल वीगेरे ने हमारी धर्मलाम के० देगवसी पासो पत्र दीरावसी २००४ ।। भादरवावद ६ और भगवान रे दीष्टी से मापकरणा होवे तो सोमपुरो सरेवुल चौलोदवाले चोत हुसीयार है उणरा माप में कोई फार फेर नहीं होनीनाल ५) पगार राहे ने आवत जावत रोबरचो मो आपकी मुरजी वे तो मु० अठासु मेजु सो आप रो पासो कागद आयो सु०

उपासरे पजुमण करुला सो मोपगार थी सवमरी परीक्रमण करुला ४ मोगरार को सवमरी परीक्रमण होवेगा।

पत्र न० १२

श्रावण सुद ६ देश मारवाड स्टेशन एरणपुरा रोड मु० तरातगड थी विनय हर्ष सूरि आदि पोसालिया तत्र देवगुरू भक्ति कारक पुण्य प्रभावक श्री सघ समस्त धर्मलाभ साथे जणावनु के आजे तमारो पत्र पोच्या अमो पर्युषण श्रावणवद १२ मगलवारे अने सवत्सरी पर्वनी आराधना भादरवा सुद ५ नो क्षय मानी भादरवा सुद ४ मगलवारे करवाना छीए। नवपद मां परमेष्टि ना रग ना अगे खुलासो मगावेल तेना उत्तर मा जणावानु के ध्यान मां जणावा रग नी अपेक्षाए अथवा कार्यनी अपेक्षाए कहेल होवानु सभवे छे। मूलनायक नी दृष्टि ना अगे जणावानु के दरवाजा ना उपला भाग ना आठ भाग ना आठ भाग करवाते मां थी सातमा भाग ना फरिने आठ भाग करवा अने सातमा भागे दृष्टि राखवी एटले सत्यम सत्यम भागे दृष्टि राखवी आ रिवाज हाल वधारे छे। वास्तुसारमां दश भाग करीने सातमा ना सातमा भाग राखवानु पण जणावे छे। दिगंबर आचार्य वसुनन्दी पोताना प्रतिष्ठासार मा द्वार नव भागो करी तेना सातमा ना सातमा नवमाशमां दृष्टि मुकवानु जणावे छे। एटले नव भाग नो सातमो भाग तेना फरी नव भाग करवा अने पाछे बीजी वखत कराएल नव भागनो सातवां भागे दृष्टि स्थापन करवी,रग वखते अधिकारनी

अपेक्षाए यह होरो नो सभव है छे।

पत्र न० १३

श्री आचार्य महाराज वल्लभ सूरि नो प्रन प्रश्न ना उत्तर मा नीचे प्रमाणे छापेल होय आव्यो

ॐ अर्ह नमः

श्री आत्मानन्द जैन महा सभा पंजाब आवश्यक सूचना। श्री गुरुदेव जैनाचार्य श्री १००८ पंजाब केसरी श्री विजय वल्लभ सूरिजी महाराज बीकानेर से निम्न लिखित सूचना पंजाब श्री संघ के लिए भेजते हैं।

पर्व	तिथि	वार	प्रविष्टा
चोमासी अठाई प्रारम्भ	आषाढ़ सुदी ६	मंगल	३० आषाढ़ तारीख १३ जुलाई
चोमासी चौदस	,, १४	,, ५	श्रावण २० ,,
श्री पर्यूषण पर्व प्रारम्भ	भादों वदी १२	,,	१६ भादों ३१ अगस्त
श्री कल्प सूत्र वांचन प्रारम्भ	,, ३०	शुक्र	१९ ,, ३ सितम्बर
श्री वीर जन्म महिमा	,, सुदी १	शनि	२० ,, ४ ,,
तेला घर (तेला)	,, ,, २	आईत	२१ ,, ५ ,,
श्री सवत्सरी पर्व	,, ,, ४	मंगल	२३ ,, ७ ,,
पारणा दिन	,, ,, ५	बुध	२४ ,, ८ ,,
आयंबिल आली प्रारम्भ	आश्विन सुदी ८	आईत	२५ आश्विन १० अक्टूबर

पर्व	तिथि	वार	प्रविष्ट तारीख
,, ,, समाप्ति	,, सुदी १५	सोम	३ कार्तिक १८,,
ज्ञान पंचमी	कार्तिक सुदी ५	शनि	२२ ,, ६ नवम्बर
चौमासी अठाई प्रारम्भ	,, ,, ७	सोम	२४ ,, ८ ,,
चौमासी चौदस	,, ,, ,, १४	सोम	१ मगसर १५,,
कार्तिक पूनम (श्री सिद्धाचल की तथा श्री हस्तिनापुर तीर्थ का मेला	,, १५	मंगल	२ ,, १६ ,,

नोट—सं० १९५३ में जोधपुरीय चंडू शुचन्डू पचांग में भाद्रों सुदि ५ का क्षय था। और दूसरे पचांगों में भाद्रों सुदि ६ का क्षय था परन्तु स्वर्गवासी गुरुदेव न्यायम्भोनिधि जैनाचार्य १००८ श्री मद् विजयानन्द सूरीश्वर जी (आत्माराम जी) महाराज जी साहिब के फरमान के मूजब ६ का क्षय किया था इसी तरह संवत १९९२ और १९९० में भी किया गया था, इस वर्ष भी ऐसा ही किया गया है अर्थात् इस वर्ष भी चंडाशु चंडू पचांग में भाद्रों सुदि ५ का क्षय है और दूसरे पचांगों में ६ का क्षय है अतः पूर्ववत ही भाद्रों सुदि ६ का क्षय किया गया है। और भाद्रों सुदि ५ कायम रखी गई है।

बड़ौत
(जिला मेरठ)
१७-६-१९४८ | 4 Jain College Baraut, (Distt MEERUT) | संघ का दास परमानन्द औनरेरीमंत्री कोटा

पत्र नं० १४ अर्हं नमः कोटा आ० कृ० ११-बुध

परम समाननीय पोसालिया निवासी समस्त जैन श्रीसंघ !

सादर धर्मलाभ मालूम हो। यहां श्री गुरुदेव की दया से कुशल मंगल है आप लोगों की कुशलता सदैव चाहता हूं। आपके वहां चतुर्मास स्थित मुनिराज श्री हर्ष विमल जी महोदय को भी सादर साता पूछें। बहुधा देहली में उनकी मुलाकात हमारे साथ हुई थी।

आप लोगों का पत्र मिला। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। आप लोगोंने श्री सिद्धचक्र मंडल मे आने वाले पांच रंगोंके कारण संबंध में प्रश्न किया जो बहुत ही अच्छा है। प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है।

पांचों परमेष्ठी-आत्मा द्रव्य के स्वरूप हैं। आत्मा द्रव्य-स्वयं अरूपी-अर्थात् वर्ण रहीत, गंध रहित, रस रहित और स्पर्श रहित होता है। तो पांचों परमेष्ठी में पांच वर्णों की वर्णन क्यो की गई ? यह प्रश्न होना स्वाभाविक है।

हमारा आत्मा स्वरूप से अरूपी होता हुआ भी वर्तमान में कर्मों की उपाधि से रुपी वर्ण वाला, रस वाला और स्पर्श वाला बना हुआ है। पैदा होना और नाश होना भी हम रुपी अवस्था मे ही अनुभव करते हैं। इसीलिये पैदा होने का हर्ष और नाश होने का रंज भी हम होता है। उत्पाद के साथ ही व्यय लगा हुआ है, इसीलिये हर्ष भी रंज से घिरा ही रहता है। अतः हम मौजूदा अवस्था में दुःखी हैं। फिर भी दुख से

छुटना हम चाहते हैं। ज्ञानी लोग फरमाते हैं कि यदि दुःख से छुटना हो तो देव गुरु धर्म की आराधना करो। संसारी वासना से हम इतने आक्रांत होते हैं कि हम सहसा देव गुरु धर्मकी पहिचान भी नहीं पाते। वहां हमारा मन भी नहीं लगता। क्यों कि अनादि काल से कुमग का रंग हमारे लगा हुआ है। पचरंगी दुनिया में हमारा जीवन भी पंचरंगा बन गया है। हमारी आखें बढ़िया अनुकूल पांच रंगोंको पाकर खुश होतीं हैं और वे पाच रग संसारी होने से संसार वृद्धि के कारण पैदा करते हैं। अतः संसार पांच रंग अप्रशस्त माने गये हैं। संसार से मुक्ति पाने के लिये इस वैज्ञानिक ढंगसे नवपद रंगों का विधान हमारे लिये किया गया है।

१ शुक्ल ध्यान और शुक्ल लेश्या की प्रधानता वाले अरिहंत भगवान का शुक्ल सफेद वर्ण।

२ कर्मकाष्ट जला देने से अग्निकी ज्योति के समान ज्योति स्वरूप की प्रधानता वाले सिद्ध भगवान का लाल वर्ण।

३ शासनके स्तम्भरूप निष्कलंक जीवन वाले सुवर्ण को समान श्री आचार्य महाराज का पीला वर्ण।

४ जिनके पास अध्ययन करके जीव अपनी विवेक चक्षुकी ज्योति को मजबुत बनाते हैं। उन उपाध्याय महाराज का हरा वर्ण। आखों की कारी के बाद हरे रंग की पट्टी बंधती है।

५ अंतरंग कर्मों की रागद्वेष की स्यामता को बाहिर निकालने वाले-साधना की कारी कमरिया ओढने वाले, जिसपर दूसरा

रग नहीं चढ़ मकता, ऐसे माधु महाराज का श्याम रग काला वर्ण

सूरदास जी ने गाया भी है–

'सूरदास की काली कमलिया, चढ़े न दूजो रग'

६ शुक्ल ध्यान और शुक्ल लेश्या को पैदा करना ही जिसका लक्ष्य है ऐसा दर्शनज्ञान चारित्र और तपरूप गुणों का धर्म ■ शुक्ल (सफेद) वर्ण है।

× × ×

देवचन्द जी महाराज ने पदुम प्रभु स्वामी के स्तवन में भगवान के लाल वर्ण को बताते हुये गाया है।

'ईयमन जिनुंय योगनो रे लाल, रक्त वरण जिनराय रे वाले मर।

देवचन्द वृन्द स्तव्या रे लाल, आप अवर्ण अकाय रे वाले सर।'

भगवान का रग हमारी चक्षु इंद्रिय के योग को सयमन करने रोकने के लिये बताया है। भगवान अवर्ण अरूपी बिना रग के हैं।

पाच परमेष्ठी के ध्यान से नवग्रह जो विविध रग वाले हैं उनकी पीड़ी मिटती है–

सफेद १–चद्र और शुक्र की पीडामें–अरिहंत का ध्यान।
लाल २–सूर्य और मगल की पीडामें–सिद्ध का ध्यान।
पीला ३–गुरू– – – ,, ,, ,,–आचार्य का ध्यान।

हरा ४–बुध–   – – ,, ,, ,,–उपाध्याय का ध्यान।
काला ५–शनि राहु और केतु ,, ,, ,,–साधुपद का ध्यान।

× × ×

१ श्वेत वर्ण के ध्यान से सिद्धि प्राप्ति शातिक पौष्टिक प्राप्त होते हैं

२ रक्त वर्ण के ध्यान से मुक्ति का वशीकरण होता है

३ पीत वर्ण के ध्यान से (धममी प्राप्ति (ज्ञानादि गुण लक्ष्मी)

४ नील वर्ण से अज्ञान का उच्चाटन होता है।

५ काले वर्ण से कषाय शत्रु का नाश होता है।

जो क्रमश: पांच परमेष्ठी के प्रभाव से होता है।

× × ×

सत्व-रजस् और तमोगुण, तीनों की प्रधानता और मिश्रण से भी पाच वर्ण माने गये हैं। रजस् और तमोगुण का पच परमेष्टी के ध्यान से नाश होता है, सत्वगुण पैदा होता है।

पाचों परमेष्टी और उनके चार गुण आत्मा रूप होने से अरूपी हैं पर पिंडस्थ और रूपस्थ तक वर्णात्मक रूपी माने गये हैं। रूपी ध्यान अरूपी पद को पैदा करने के लिये करना चाहिये। इस सबध मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। अभी इतना ही कहकर समाप्ती करता हूं। माननीय हर्ष विमल जी महोदय किस प्रक्रिया मे लगे हुये हैं ? आप लोग सपरस्त सब देवगुरू धर्म की भक्ति सेवा साधना म सफल हो यही आत्मा

से चाहता हूं। हम लोहावट थे तब हमें विमलजी सोजत में थे याद आता है।

आप लोग सिद्धचक्र जी के ध्यान से सिद्धि प्राप्त करें पत्र को पढ़कर और कोई विचार पैदा हो वे सूचित करें। धर्म ध्यान करें।

पुज्येश्वर आचार्य देव श्री जिन हरि सागर सूरि
भजन शिष्याणु कवीन्द्रसागर मुनि।

रंग गयो रंग गयो रंग गयोरे। नव पदके सुरंग मन रंग गयोरे। टेर।

शुद्ध शुक्ल ध्यान शुक्ल लेश्याविशेष से अरिहंत शुक्ल रंग रंग गयोरे। नवपद।१।

ध्यान अगनि से कुकर्म काष्ठ को जलाय के सिद्ध जोति लाल रंग रंग गयोरे। नवपद।२।

शासन सम्राट सूरि बाह्य अंतरंग से असली सुवर्ण रंग रंग गयोरे। नवपद।३।

ज्ञान नेत्र दायी दोष दूर हारी दिव्य रूप पाठक के नील रंग रंग गयोरे। नवपद के।४।

अंतरंग श्यामता को खींच के नीकालते। साधु बाह्य श्याम रंग रंग गयोरे। नवपद।५।

दर्शन व ज्ञान चरण तप पद से शुक्ल ध्यान। शुद्ध होत शुक्ल रंग रंग गयोरे। नवपद।६।

पुण्य साध्य होत है सुपुष्ट साधनों से पायी सिद्ध चक्र पुट रग रग गयोरे । नवपद ।७।
पाय के निमित्त अग सिद्धचक्र दिव्य रग । मिथ्या अनादि कुरग गयोरे । नवपद ।८
श्री हरि पूज्य नवपद मे कर्नीनुचित अब ले सपूर्ण रग रग गयोरे । नवपद ।९।
पढे- विचारे- प्रश्न हो तो लिखें
(इति शुभम्) प्रतिमा जी सबधी प्रश्न उत्तर पीना पत्रम दिया जायगा ।
पत्र न० १५
(दुसरी वक्त पत्र भेजा उसका जवाब पहिले पत्र का जवाब नहीं आया)
किशनगर आ० शु० ५ गुरुवार विजय ललित सूरि तरफ थी श्री सकल जैन सघ समस्त धर्मलाभ साथे क० के० अगे सुख शाता छे । तमारा पत्रों मल्या पूछेला प्रश्नों ना उत्तर जोईने लखीशु हाल तबीयत नरम रहे छे । ते थी हवा फेर माटे किशन-नगर शहेर थी ने माइल दूर रहेल छी अे यहां पुस्तकों जोगवाई नथी। थोड़ा समय मा जवाब जरूर लखीशुं अेज ।
पत्र न० १६ अर्हं नम द्वादशी
माननीय जैन सघ पोसालिया !
सादर धर्मलाभ पत्र दिया है वह मिला होगा । श्री मूल-

नायक भगवान की दृष्टि उनके दरवाजे से कितनी रहे ? उत्तर दरवाजा पूरा नाप लो उस नाप के दस हिस्से करो। उसमें सातवें हिस्से के फिर दस हिस्से करो उसमें सातवें हिस्से में भगवान की दृष्टि रहनी चाहिये एसा वास्तु सार प्रकरण में लिखा है। मतान्तर से आचार दिनकर में भी दूसरा प्रकार भी इसमें लिखा है कि दरवाजा नापके आठ हिस्से करो उनमें भी ऊपर का सातवां भाग उसके आठ हिस्से करो-सातवें भाग पर भगवान की दृष्टि रहनी चाहिये। अर्थात् द्वार नापके ६४ भागकर ५५ वें भाग पर भगवान की दृष्टि रखो। मागह मगतर्गे सत्रम सतसिद्धि अरिहन्ता। अधिक देखना हो तो-जयपुर के वास्तुसार पंडित भगवानदास जैन मोतीसिंह भोमिया का रास्ता जयपुर (राजस्थान) से मंगाकर देखलें। वास्तुसार पृ० १२७ १२८ का देखना। कतीतुणागर
पत्र नं० १७
हितान्ते वासी
विनय हिमाचल (हिम्मत सूरि) Bjeagaum 10 8 48
,~श्री सैन समस्त जोग धर्मलाभ। पत्र मिला संवत्सरी सोमवार की करने। पंच परमेष्ठी के पांचो वर्ण अलग २ हैं वो गुणोंके आश्रीत है। विशेष वर्णन रूबरू मिलने पर। वर्तमान में मुझ के नासुरका ओपरेशन कराने के वजह से फिर समय मिलने पर। भगवान की दृष्टिके विषयमें द्वार के सातवें भाग पर होना शास्त्र बताता है, वास्ते मुनिराज हर्षविमलजी

से अनुवदना सुखशाता, यहांके श्री सघकी उन्हों से वदना अर्ज और यहांके सघकी आपसे जयजिनेन्द्र देव दर्शन में याद करना योग्य कार्य लिखना P T O धर्म ध्यान में वृद्धी करना और समाचार आपके रूबरू से यहां फिर पुछने पर। यहा पर प्रतिदिन व्याख्यान होता है। धर्मोन्नति श्रेयस्कर है काफी तादाद म जनता ध्यान म दीलचस्पी से लाम लेती है। किम् अधिकम् आपके तर्फ का शुभ सदेश चाहते हैं। वर्तमान में दो पचरगी तप सानद सपन्न अठाई महोत्सव के साथ हो रही है। दः वि० हिमाचल सूरि।

पत्र न० १८

श्रावण वदि ९ मु० पोसालीया

पाटण थी ली: परम पुज्य गुरुदेव श्रीमद् पन्यासजी श्री रतनलजी महाराज साहेब जोग लिखी आदि हाला अर्ज

पोसालीया मदे मच्चे दव गुरू भक्ति कारक समस्त श्री संघ योग्य हमारा धर्म स्नेह पूर्वक धर्मलाभ वांचजो जत तमारो पत्र मल्यो वाची बीना जाणीजी हालमां लखवाने के तमे जे प्रश्न पुछ्या तेनो जवाब हवे पछी ना पत्र मां लखीछु ते जाणजो पजुसण श्रावण वदि १२ थी शरूयात ने भादरवा सुदी ४ ने मगलवार सवत्सरी छे ने भादरवा सुद ६ नो क्षय छे ते जाणजो अेज पण अमेति प्रमाणे करवाना छे ने अमदावाद थापना उपाश्रये पण ते प्रमाणे थवानु छे तेजाणजो गाम मा सर्व भाई बहेनो ने अमारा धर्मलाभ कहेजो कागलनो जवाब लखजो

मु० पाटण म० भाभानो वाडा मां मलल्नो उपाश्रय वाया महेसाणा उत्तर गुजरात ली० पुज्य गुरुदेव आज्ञाकीतमुनि कनक विजय ना धर्मलाभ बनारसी मुनि श्री हर्षविमल जी ने अमरावती अनुवदणां सुख साता कहे जो।

पत्र न० १९

आचार्य महाराज श्री आनद सागर सूरीश्वर जी महाराज की आज्ञाथी लि० कंचन विजय सुरत २००४ श्रा० सु० ११

मु० पोमालीया श्री जैन संघ

धर्मलाभ स्था लिखवानु के तमारो ता' १० =-४८ नो पत्र मल्यो छे तमारा प्रश्नों ना खुलासा निचे मुजबछे पर्युषण पर्व का आराधन श्रा० व० ११ सोमा ता० ३०-८-४८ पर्युषण प्रारंभ,श्रा० व० १४ गुरू ता: २-९-४८ कल्पवांचन,श्रा० व० ०) शुक्र ता ३९-९-४८ जन्मवांचन भा० सु० ४ सोम ता' ६ ९-४= सवत्सरि पर्व इस माफीक आराधना करना—

' नवपद में रग ध्यान के लिये गोठवे हुवे है वो रग क्रम से उतरते है। दीशा ओर विदिशा में रगों की मध्यता होने से ध्यान करने में अनुकूल होता है।

द्वार शास्त्र जीम माप की होवे इसका अष्ट भागकर यचला जो सप्तमा भाग इस भाग का भी अष्ट भागकर इसका सप्तमें मुलनाय जी महाराज की दृष्टि आते हैं जैसे ७२ इच का द्वार शास्त्रमें ६१ इच आरे ७ दोरे पर दृष्टि आती है। ६१ ३ इंच पर मुलनाय जी महाराज री दृष्टि आती है।

जैन नि कंचन विजय का धर्मलाभ।

पत्र न० २०

वंदे वीरम् श्री चारित्रम् मा० व० १२ महेसाणा

श्रावक वर्ग श्री संघ समस्त

धर्मलाभ। यहा तथा त्यारे बाजु आनन्द भा० शु० ११ सोम थी पत्राराधन चालु छे मा० शु० ४ सोमवारे सरस्वर्ग छे

सिद्ध चक्रना रंगा बाबत श्रीपाल नो रास अने नव पद विधिमां विगतवार समजावेल छे तेत्या थी समजी लेवुं। मूल नायक प्रभुनी दृष्टि प्रधानत दरवाजा नारे या मार्गे आवे। आवी बाबतो रूबरू मा समझावी शकाय पत्र थी समजावी शकाय नहीं जेज।

(श्रीपाल रास नवपद विधी में लिखते हैं रंगोंके भेदका खुलासा नहीं)

धर्म ध्यान कर्जो ली० मुनि दर्शन विजय ना धर्मलाभ। ता क.आ पत्र नी कोपीदु कोपी करी छे आथा मा० शु० ११ लखी छे। त्या मा० व० ११ आवे छे पत्र मा भूल छे।

पत्र न० २१

मु० पादरली पो० तखतगढ मारवाड ता० १०-८-४८

ली० आचार्य श्री विजय महेन्द्रसूरि व० था० ४ सोमालिया मध्ये देवगुरू भक्तिकारक सुश्रावक संघ समस्त जोग धर्मलाभ वि०तमारो पत्र मल्या अने सुखशांति छे तपने सुखशांति वर्तो लखेल बाबत नो जवाब नीचे मुजब—

१ संवत्सरी पर्व भाद्रवा सुद ४ ना मंगल वारे थशे कारण के जोधपुरी पंचांग मा सुद पांचम नो क्षय छे। सुद ४ संवत्सरी पर्व ते थी तेनो क्षय थाय नहीं अेटले बीजा पचांग ने आधारे ६ नो क्षय मानवानो छे।

२ प्रभुनी दृष्टि गभाराना द्वारना आठ भाग करवा तेमा छे भाग नीचे मुकी अने आठमो भाग उपरनो छोडी ने सातमा भागना आठभाग करवा तेना सातमा भागे प्रभुनी दृष्टि आववी जोइये अेम शिल्प शास्त्र मां कह्यु छे दोरी थी अथवा फुट पटी थी माप काढी ने जावु।

३ पंच परमेष्टी मा पांच वर्ण हाय छे अने ते अनादी थी मनाय छे अे वर्ण ना हेतु जाणवामा नथी। पण तीर्थंकरना शरीर पांच वर्ण ना होय छे। अने तेओ गुण भी पांचे पद ने स्पर्शे छे। अे अपेक्षा अे कारण मे कार्य नो उपचार करीने मानी शकाय।

पत्र न० २२

श्री २००५ भादरवा ६

मारवाड़-जक्मन थी लब्दी सागर रो धर्मलाभमें वचावम श्री पर्युषण पर्व मीती भाद्रवा वद १२ वार मंगल ने बेटसी संवत्सरी मा० सुद० ४ वार मंगल ने होसी प्रभु की दृष्टि बारणा रा आठ भाग करणा जीण में से एक उपरली छोडणे सातमा भाग पर दृष्टी होणी चाहिजे। नवकार मंत्रमें जो पद होवे गुण अरिहंत के मपेत साधु के स्याम हैं जैसे पच परमेष्टी का फेर

जादा ब्हा उतरना तो ईनका पुस्तक देखणे से साफ साफ जाहीर करुला अगार की वखत में फुरसत नहीं है जगह-जगह के पर्युमण के किस दिन बेटाणे का कागद आ रहे हैं सो जवाब देना पडता है भा० वद० ६

पत्र न० २३

वढवाण आचार्य विजयनन्दन सूरि

तत्र श्री देवगुरू भक्ति कारक श्री पोसालिया श्रावक संघ समस्त योग्य धर्मलाभ।

अपर सवत १९५२–१९६१ तथा १९८९ नी माफक आवर्षे पण भारवा सु० ४ ने मगलवारे श्री सवत्छरी पर्व नी आराधना करवाना छीअे अेटले श्री पर्युषण पर्वनी शरूआत अट्ठाई धर श्रावण वद १२ मगवार करवाना छीअे

प० पूज्य परमोपकारि प्रात स्मरणीय सासन सम्राट् पू० पाद गुरू महाराज श्रीजी तरफ थी प० पूज्य विजयोदं सूरिजी महाराज तरफ थी धर्मलाभ धर्म क्रिया मा उद्यम राखसो जी श्रावण सु १४ बुध दः नीति प्रभविजय जीना धर्मलाभ।

पत्र न० २४

धीकांटा	ॐ	श्री० प० ७ गुरू
कोठी पोल सामे उपाश्रय		२४७४

श्री बड़ोदा से लि० प्रताप वि० तत्र देवगुरू भक्तिकारक सु श्रावक श्री पोसालीआ जैन संघका समस्त योग्य धर्मलाभ वाचना अब देव गुरू पसाय से शाति है पत्र आप संघका

मिला हान्में दुसरी धार्मिक प्रवृति पर होने से आपका खुलासा नहीं लिखते आपको संतुष्ट नहीं कर सका और आपका पत्र से पत्ता अनुमान से लगता है और कई जगह पत्र आपने लिखकर जवाब खुलासा मांगा है तो मेरे से गीतार्थ ज्ञान पूज्य गुरुश्री की पास से बहुत अच्छा समाधान मीलना सभव है जिसी से भी अगर मतांतर याने याप लोगों को धरना सशय नहीं जाय वास्ते वो लिखना मुनासिब नहीं है धर्म ध्यान में तत्पर रहयेगा याद करने वाले को धर्मलाभ ६

मुनी हर्षविमल का अनुभव

३ अब जैनोंका नवकार मंत्र बवलीक में हय सारी दुनिया जो जो परिचय में आई सो जानती होगी–जैनो इनको बहुत से स्तुती में मंत्र जपो नवकार, ए छे चौद पुरवानोसार, जीवता समरो मरता समरो, बेसता समरो उठतां समरो सुतां समरो लगतां समरो वीगेरे बहोत प्रशंसा पुर्वजोने करी हय सो बोलते हय। अब कुच्छ उनमें होना चाहिये सो है–सारी दुनिया सारे धर्म सबवस्तु इसमें समाती जो जीतना वर्णन कर सके उसकी शक्ति और ज्ञानपणा अनुभव–

४ अब चौद पुरवका सार सो चौद पुरव क्या चीज ये समजना चाहिये पुरव ये विद्याकी शक्ती का माप बताया नाम चौदाके ही जुदे २ हैं–सो एक पुरव एक हाथी बराबर मसीकी साइसे लीखने पुरा होवे फेर आगे दुसरा पुरव दो हाथी, तीसरा पुरव चार हाथी बराबर ऐसा हरेक पुरव डबल डबल करने चौदा पुरवमें

१६३८३ हाथी बराबर मसीकी साई बनाई जाय उतना लीखा जाय जब पुरा होवे प्रमाण बताया लेकीन आगे के जमाने में एक पाठी दो पाठी विद्वान अभ्यास करते थे आयुष और सरीर का प्रमाण भी ज्यादा था सो अभी जुने जमाने के हाड पींजर सोध खोलमे मिलते हैं । वो ही जैनों के शास्त्रों की सचाईको सिद्व करते हैं । उम चौदा पुरवमें सारी दुनिया की कोई भी वस्तु बाकी नहीं रहती-सब आजाती लेकीन सिखाने वाले जैनसाधु वृतीमें लाकर सब दुनिया की विकारी वस्तुका त्याग कराकर पीछे सिखाते थे । सिखाने वाले का दिल भी दुनिया पर से हटजाता था वो समझते थे कि ये जानने के लिये द्रव उपयोग करने में हिंसा होवे और ससार वृद्धी होवे-समार का जीवन विनाशी द्रव बडी गरमी भुख प्यास बीमारी शत्रु वीगेरे भय तो है ही लेकिन किस वखत मौत उठावेगा सो पता नहीं । फेर माताके गर्भ में अशुची मे निकालना, जन्म वखतकी तकलीफ, बुढापे की तकलीफ जानने से वो विरक्त भावना से तपजप ध्यान मे ही मग्न रहते थे-जनी वो विद्याओं प्राप्त होती थी-

५ अब इम परमाने नवकोठे मे उसमें नाम और रुप ये सारे जगतकी उसमें रमण और उसीमें से मुक्ती का भेद मिलता हय । जैसे जोतिष में बारारासी बारा लगन और नवग्रह दुनिया के मनुष्य और देसो पर अधिपत्य स्थापीत होते सुख चढती पडती रोग मृत्यु वगैरे इन विद्याके पारगत



१६३८३ हाथी बराबर मसीकी साई बनाई जाय उतना लीखा जाय जब पुरा होवे प्रमाण बताया लेकीन आगे के जमाने मे एक पाठी दो पाठी विद्वान अभ्यास करते थे आयुष और सरीर का प्रमाण भी ज्यादा था सो अबी जुने जमाने के हाड पींजर सोध खोलमे मिलते हैं। वो ही जैनों के शास्त्रों की सचाईको सिद्ध करते हैं। उस चौदा पुरवमें सारी दुनिया की कोई, भी वस्तु बाकी नहीं रहती–सब आजाती लेकीन सिखाने वाले जैनसाधु वृतीमें लाकर सब दुनिया की विकारी वस्तुका त्याग कराकर पीछे सिखाते थे। सिखाने वाले का दिल भी दुनिया पर से हटजाता था वो समझते थे कि ये जानने के लिये हय उपयोग करने मे हिंसा होवे और ससार वृद्धी होवे–ससार का जीवन विनाशी हय, बडी गरमी भुख प्यास बीमारी शत्रु वीगेरे भय तो है ही लेकिन किस वख्त मौत उठायेगा सो पता नहीं। फेर माताके गर्भ में अशुची मे निकालना, जन्मवख्तकी तकलीफ, बुढापे की तकलीफ जानने से वो निरक्त भावना से तपजप ध्यान मे ही मस्त रहते थे– जभी वो विद्याओं प्राप्त होती थी–

५ अब इस परमाने नवकोठे में उसमें नाम और रग ये सारे जगत्पती उत्तम रमण और उसीमे से मुक्ती का भेद मिलता हय। जैसे जोतिष में बारारासी बारा लगन और नवग्रह दुनिया के मनुष्य और देसो पर अधिपत्य स्थापीत होते सुख दुःख चढती पडती रोग मृत्यु वगैरे इन विद्याके पारगत



बता सकते वैसे ये दुनियाकी उत्पती किस तरह सो सारे विज्ञानी सोधक नास्तीक और आस्तीक को मजूर करना पडेगा। १ अब हम नियममें पहिले साधुपद लेकर फेर उपाध्याय आचार्यपद आता हय। सो जो साधुपद रगमें काला हय। सो आकास तत्वका रंग बताया हय। उमार क्या हय नमोलोएसव्व साहुण सो जैनोंमें हाल साधुपद २८ गुणोंसहीत अढीद्वीपमें होवे उनोंको नमस्कार। ये इनकी अगत मान्यता हुई लेकीन यहां पर सृष्टीकी उत्पती बताना हय। और जो पदमें भी अठार का नाम बताया नहीं। लोएसव्व इनका अर्थ सारा लोक हुवा सारे लोकमें क्या था—आकाम याने अवकास काला रंग २ फीर उपाध्याय हरारंग सो वायु तत्वका माना गया हय। सो पहिले आकास इसमें से वायुकी उत्पती हुई। फीर आचार्य पीला रंग सो पृथ्वी का माना गया हय वायुमें से पृथ्वी तत्व (जमीन) की उत्पती हुई—४ फीर अरिहंत सफेद सो जल तत्वका रंग माना गया हय। पृथ्वीमें से जलकी उत्पती भई ५ फीर सिद्ध लालवर्ण माना गया सो अग्नी तत्वको मूल अग्नी पाणीके सवर्ण से हुई अभीभी समुद्रों में वडवानल अग्नी देखने में आता और बरसाद के बादलों में बीजली उत्पन्न होती और हालमें कितनेक ठिकाने पाणीमथन से बीजली बन रही—

अब ये पांच तत्वोंमें आकाम काला जल सफेद और अग्नी लाल सो प्रगट देखने में आते लेकिन पृथ्वी पीला और वायु हरा क्यु बताया सो वांचक वर्गको संदेह रहेगा सो टालते हैं।

अब जमीन चाहे मो गमकी हो लेकिन अंदर बीज बोने मे जहातक हवा न लगे पृथ्वीके पडमें हो-उसके अङ्कुर का पीना रग आता है और बीज भी सर्वथा पीला बन जाता है और बाहेर आने से हवा लगने से हरा बन जाता है । कोई पूछे हवा मदद्को लगती जब सब हरे कैसे नहीं बनते सो खुलासा हवा जैन शास्त्रों में ८४ लाख जीवोंकी जातीमे हवा एक इन्द्री जाती में सातलाख प्रकार माने है । और बनस्पती को भी एक इन्द्रीय वाले माने दसलाख और चौदहलाख जाती या प्रकार-उसका खुलासा दसलाख जाती प्रत्येक वनस्पती बताई । प्रत्येक का अर्थ एक वस्तुमे एक जीव और साधारण में एक वस्तु मे अनेक जीव जो जैसे प्रत्येक वनस्पती तोडे पीछे तुरत कुमलाने लगेगी और साधारण महीनों अगर वर्षों तक टहरेगी । उसमें अनेक भेद जैन शास्त्र कहते और हवा एकेन्द्री उसकी जातीपर असर किया । बढ़कर आगे बढाने वालों पर असर नहीं होती। ६ मो पाच तत्वों का खेल सो जगत कहलाया । जहर इसे पंच भुतभी कहते हैं । अब ये पंचभुत सुख्म से सुख्म परमाणु से पहिले बनते हैं जैनोंके ग्रन्थमें इसे सुख्म निगोद नामसे माना है जैसे बादलो के घर्षणसे बिजली उत्पन्न होती वैसे ये आपस मे घर्षणसे चेतन उत्पन्न हुवा उससे जीव माना गया और अचेतन रहा सो जड या अजीव माना गया और ये सुख्म सबलोक (जगत) मे भरा है जैनोके शास्त्रों म प्रमाण १४ राजू लोक बताया हय ।

७ अब जीवोंकी उत्पतीके साथ वो जड़ तत्वभी लगा रहता है। जैसे सोने की उत्पती के साथ माटी भी लगी रहती है और उसको अग्नी संस्कार और कूटना पीटना वगैरे ज्यादा होते होते वो शुद्ध कुंदन बनता है और यहा जैन शास्त्रों मे सुक्ष्म निगोद में जीवोंका जनम-मरण मनुष्य के एक श्वासोश्वास जितने टाइम में साडे सतरा वखत होता है ऐसा होवे मायमे लगी हुई जडवस्तु घटते बादर निगोद मे आता है बादर निगोदये की मनुष्योंके चर्मचक्षु देख सके, सुक्ष्म निगोद यकी मनुष्य चरम चक्षुवाला देख न सके, ये आर्यसमाजीके उत्पादक पंडीत दयानंद सरस्वतीजीने नजरमें दीखे वोही मानने का सत्यार्थ प्रकाश में उपदेश दिया हय। लेकिन हालके जमाने का दाखला बताता हु। होमियोपथी और बायोकेमीक दवाओं में एकम प्रमाण जैसे बढ़ते जाता वैसे उस द्रव्यमे दवाका प्रमाण घटते जाता-सो दोसो पांचसो और हजार एकम दवाओ में एक तोले मे लाखों क्रोडों भव जो भागसे भी न्युनदवा का भाग होता है। सो पृथक किया जावे तो नरी आंखसे तो नहीं लेकीन दुरबीन से भी दिखाई देना मुसकेल अब भी वो सुक्ष्म परमाणु के जुने मे जुने रोगको असर करता है। हमने अनुभव किया है आप अनुभव करदेखो अगर उन दवाके जानकार विद्वान डाक्टर पुछो। और दुसरे दाखल यही पुस्तक में राष्ट्रपतीजी को हमारे निवेदन में देखो और यही प्रमाण जैन शास्त्रों के कर्म को सवुत करता है और ये सुक्ष्म होते कैसे सुईके अग्र भागमें

असख्य जब भी रूपी घटाये और जीव अरुपी भी अरुपी पर परमाणु पाच घटावेके उसके आठ विभाग कर्मो में घटावे।
८ अब जैसे जैसे इनपर से पुद्गल परमाणु घटते जावे वैसा उची गतीम आता जाय।

१.सुक्ष्म निगोद म से २ बादर निगोद मे, ३.फेर एकेंद्री जीवोको थावर म माने जो अपनी मर्जी से हलन चलन नहीं करसके जैसे पृथ्वी पानी अग्नी वायु वनस्पती—इनको एकेंद्री माना,क्यु क इनको एक ही शरीर दरसन में आता। ४ इसे हलका होते आगे बढता जब दो इद्रीमें आता मा सखमीप अलसीये वगैर इनके शरीर और मुख ये दो इद्रीया मानी हैं। ये अपनी मरजी मुजब हलन चलन कर सकते हैं। ५. इसे हलका हो आगे बढता जब ते इन्द्रीमें कीडी मकोडी जुवा वीगेरे,इनको सरीर,मुख और नासीका ये तीन इन्द्रीयां मानी हैं। ये भी अपनी मरजी परमाने हलन चलन कर सकते हैं। और इसके आगे आवेंगे जोभी सब हलन चलन करसकते और इससे हलका होन आगे बढ जब चौइद्री सो मक्खी, भमरे, डास, मछा, पतग, बीछु विगेरे सो इनके शरीर मुख नाक और आंखे ये चार इद्रीया होती है। यहा सो भी दु.ख उठाते नग्रा पाप घटे तो हलके के प्रमाणमे पचेन्द्रीमे आता हय इसम शरीर मुख नाक आख और कानयेपाच सपुरण इन्द्रीये मानी है। इसमे चोपगे पसु वीगेरे थलचर पक्षियों वगैरे खेचर और जलचर म मछलीया वगैरे और जमीनपर घसीटकर

चलने वाले साप वगेरे, दो पाउसे [illegible]
का वींडा घो वगेरे, और मनुष्य समेत [illegible]
[illegible] कर्म न्युन होने वैसी हलकी ऊची योनी पाकर [illegible]
का भुगतत और नवे बानते सबसे मनुष्य [illegible]
से और बाकी रहे तपजप ध्यान से [illegible]
क्वलज्ञान पाता है और मरेपीछे परमात्मा [illegible]
हैं। बाकी और भी जैसे पुद्गल या धर्म [illegible]
दुखी दुःखी रहता है । जैनोंके शास्त्रों के [illegible]
कार पर से सृष्टी की उत्पती का क्रम [illegible]
परसे जड़ और चेतन अगर, दुसरा नाम [illegible]
सो अजीव सज्ञा नहीं सो उसको [illegible]
होता नहीं लेकिन जिसको सज्ञा [illegible]
उसको बचाना या सुख देना सोपुन्य, [illegible]
देना सोपाप बांधने का रास्ता सो आश्रव [illegible]
[illegible] रास्ता उसका नाम सवर, पापको [illegible]
नाम निर्झरा, मनुष्यों के प्राणी के [illegible]
मे आना उसका नाम बध, सबरूपोंसे [illegible]
मोच । ऐसे ससार के जीवोंके ऊपर [illegible]
आश्रव सवर वगैरा बध और मोक्ष [illegible] । और [illegible]
२४ प्रकार से दु ख भुगतता [illegible] भी [illegible]
सीर विचार से जीवोंकी पहिचान [illegible]
पहिचान और दु ख किस योनीमें [illegible]

ये जानने की २४ टडक ये पुस्तक तीनों धमाने से यहोतमा अनुभव होजता है।

९ अब जैनोंके नवकार परसे जगतकी उतपतीका नियम मय भ्गया गया। अब उनीमे ही रमण ममझता हूं-हरेक जीवों में पाच तत्व भरे हुए। मनुष्य मात्रम मी पांच तत्व हय। पाच तत्व सीवेर कोई समारी जगतका जीव नहीं। मारी दुनिया पांच तत्वों में है। उमके कुछ उदाहरण बतलाता हु। मैंने जो पेपरों में से सग्रह कीये वो बतलाने जाऊँ तो बडा ग्रन्थ बनता है। लेकिन अब मुझे इतना अवकाश नही, आयुष थोडा है उम परमाने काम बहोत हैं औरों की मदद नहीं।

१ हरेक मनुष्य और प्राणीका श्वासोश्वास विगर जीवन नहीं, उम श्वासोश्वास में पांच तत्व रहते है। स्वरोदयका पुस्तक देखो।

२ लुईकुहनी जरमनी का डाक्टर उसका दरद एलोपेथी डाक्टर से न मिटा। पानी से मिटाया उसमें माटी पाणी हवा बराल और सुर्यके उपचार हय। खोराक क्या और किस तरह लेना बताया हय सो अनाज में जैनों के आंवलके प्रकारे से मिलता आता उस पुस्तक का नाम हाइड्रोपथी या पानी का इलाज। उसकी जरमनी में इंगलीश में अनेक आवृती हुई। हिंदी में कुछ आवृती हुई थी। हमारे पास भी एक आवृती थी और भी विज्ञान विगेर के साधन जमा किये थे (लेकीन लोभी-पैसे वाले सेठउ+ही नेहगलगजर्मीन.थ+ह. से षद-

लाया आप सन्यास लेते हो तो आपका साहित्य हमारी लाइ-
ब्रेरी म ममालकर रखेंगे आपके नामका कबाटपर जुदाबोर्ड
लगाकर उसमें से जो ग्रन्थ मगावोगे सो हमारे खरचे से
भेजेंगे, कार्य हुवे पीछे हमारी लाइब्रेरी मे पीछा भेजना ये
सुन जबानी वात थी नहा लेगये पीछे उत्तर भी न दीया) जैन
ग्रंथामें से हाल ज्यादा प्रचार श्रीपाल राजाका अनुकरण करते
हैं। उनको कुष्टका रोग हुवा था और राज भी चला गया था
सो यही नवकार के दरेक पदके रंग प्रमाणे अनाज का खोराक
एक वखत घी तेलसवाला वीगरका जो हाल में लुइ कुहनी की
बर्मनी वाले की विज्ञान की शोधमें बनाया सो हमारे आगे से
चला आता हये। हमारे विशेषता उस पदका वैसे रंग प्रमानें
ध्यान करना और माला कपडे के रंगों से विशेषता है। उनसें
उनोंका रोग गया था और राज्य भी मिला था। हाल विज्ञान
शोधकों के रंगों सम्बन्धी कइक लेख आते हैं उसमे से एक
का खासमथाला गुजराती भाषामें हे सो लीखता हु ज्यादा उस
पेपर से जानना पपर का नाम सेवक ता० १ सपटेंबर १९४३
अनेक जातना रोगामां चमत्कारिक असर करता रंगों दर्दार्थी
फराल लाओने रंगोथी राहत आपवानो अवसरो। "हेल्थफोर
ओल" नामना अंग्रेजी मासिकमा रोबर्ट चीनले नीचे नो लेख
लख्योछे। रंगोमारोगदुर करवानी अलौकिक शक्ति रहेलीछे
अनेक घडे आपणा अनेक रोगोंने दुरकरी सकायछे। प्राचीन
कालमां लोको रंगने पुर्ण विज्ञान मानता हवा। आपणे पणतेनो

अभ्याम करीने रोगोनो उपाय करता मां तेनो उपयोग करी शकीये। एपुरवार थइ चुकयुके रंगनो घटतो उपयोग करीने आपणे आपणा सरीर नेफरीथी बलवान बनावी शकीये छीये-रंग आजे जेटलो आवश्यक अने महत्वपूर्ण पदार्थ थइ पडयोछे तेटलो तेकदीपण मनातो नहनो। लस्कर अनेमहेरी बने वर्गना माणसोए जेओ गोलाओना धडाकाने लीधे स्नायु रोगना रोगी बनी जायछे रंगोनी असरथी नवी तंदुरस्ती अने बलमेलव्याछे। आपणे बधाए रंगोनीज दुनीयामा एवाज रंगोथी घेराइने रहेवु जोइयेके आपणा सुख अनेस्वास्थ्यमां सहायक बनी सके। रंगनो पुरता उपयोग करवाथी दुनियानो वातावरण अने आपणा रुपरंग बदलाई सकेछे। देखो लुइकुहनी का तत्वोंका उपचार। पीछे बालोंका रंगोका उसमे कपडे वैसे रंगके पहनने से रोग गया। श्रीपाल राजाने नहोव मा रंगोंपर पदोंपर और पत्रों पर ध्यान किया था। ये नवकार का भेद।

३ वायोकेमीक दवा बारे राशीपर असर है। गुण व्याधी हजारपण औषध बार-बारे राशीके भी जुदे जुदे रंग है। रोगके नीदान मे जीभपर रंगोंका देखाव उसपर चीकित्सा होती।

४ सुर्यके किरणों को जुदे जुदे रंगोंके बोतलमे लेकर जुदे-जुदे रोगोंपर चीकित्सा होती है, इसका नाम रंगरसायन। इगलीसमे क्रोमोपथी अमेरीकामे इसका प्रचार ज्यादा होरहा। गाधीजी भी नेचरल उपचार ज्यादा पसन्द करते थे। सुर्यके किरणों मे भी तत्वोंका रंग हय। कोई वखत वरसाद पडके

रहे जाना अगर पडने का होता जब खुले सूर्यकी किरणे वो बादल रुपी वराल पर पडने से तरेहवार गोलाकार रंग दिखता यहोत से लोक उसको इंद्रधनुषके नाम से पहिचानते।

५ स्वर व्यंजन ५० अक्षरों भी इसी तत्वोंके हय। कौन से अक्षर कौनसे तत्वों में-अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ पृथ्वी तत्व। ए ऐ ओ औ अं अः जलतत्व। क ख ग घ ङ च छ ज झ अग्नीतत्व। ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ वायु तत्व। ब भ म य र ल व श ष स ह आकाशतत्व—

६ पाच परमो पाचोतत्वों का और पांचोरंगोंका अनुभव हुवा। अब रहे चारपद कोनेके सो चारों सफेद यणके हय। सो चेतन इलपाटा खाते खाते अनेकयोनी भटकते भटकते दुःख भुगतते भुगतते कर्मका (तत्वोंका बोझा घटने से मनुष्य जन्म पाता, जब ये चारों में से पहिले दोशुद्ध ज्ञान दर्शन प्राप्त होता। ये सो पीछेके दो चारित्र तप आपं आप आजाते। उसको ग्रहण करने से आत्मा अपने पर बाकी लदे हुवे तत्व जोकरम रूपमें हुवे सो हटाकर चेतन आत्मा शुद्ध हो जाता है। तब जहां जरा भी दुःखका नाम नहीं, गरमी नहीं, बीमारी नहीं, शत्रु नहीं, मित्र नहीं, सेट नहीं, राजा नहीं, प्रजा नहीं, उपरी नहीं, भुख नहीं, प्यास नहीं, मृत्यु नहीं ऐसा अजर अमर स्थान जिसका नाम मोक्ष रखा गया वहां संपूर्ण ज्ञान और ताकत पाकर चलेजाता हय। फिर उनसे ये दुःखरुपी मृत्यु स्थान आनेकी जरूरत नहीं।

७ सो योगीलोक ये तत्त्वोंकी भाषामे सोना सीधी बनाते, दोरता दो पीयरा चंदा वरणा चार चेला रखों खीचडी तो भुख न मारी ये योगियों का विषय हय।

८ ये नवकार ये नव आंक अक्षय हय। चाहे उतना गुणाकार से बढाते जाव, तुटता नहीं।

९ फेर ये नव आंकसे नवकोठे मे पदरीया और बीसा यन्त्र बनता जिसमे अनेक सिद्धियां उत्पन्न होतीं। 'जिसके घरमें बीसा उसका घर भरे जगदीसा' ऐसी कहलावत है।

अब इस नवकार मे प्रथम उत्पत्ति का विषय बतलाया पीछे सारा जगत इसीमे रमण हुकम बतलाया। इसका जितना फेलावा करो उतना कम है। जितनी नवी सोधखोल हुई होगी सब जैनधर्म के और ये पांच तत्त्वों के अंदर का ही विषय आवेगा। जुने वखतके हाडपींजर रबे मिलते सो जैन शास्त्रोंमे बताया। आगे मनुष्य का शरीर बडा और आयुष भी ज्यादा। दिन दिन शरीर छोटा और आयुष कम सो बात मिलने आती। जैनके वर्तमान तीर्थंकर २४ इसकाल के अगले भूतकाल के भी २४ नाम विद्यमान हय। ऐसे अनादी छ छ आरेक कालमें चौवीस होते गये। वैसे जैनधर्म अनादी और पांच तत्त्व अनादी सिद्ध होते हैं। और हिंदू धर्म की उत्पत्ती बताते सो तत्त्व उस वखत थे और वरसों की गीनतीमे आता है। जैन सिद्धान्त ये संसार को दु खमय माना है। जितने जितने तत्त्वोंके पुद्गल घटे उतना दु ख कमती। घर संसारमे इच्छा रखना ये तत्त्वोंके विकार

हय। छोटी बालक अवस्था मे विषय कुछ नहीं तब उनको कुछ दु ख नहीं। लेकिन उमर में आता विकार उत्पन्न होता। स्त्री पुरुषको एक दूसरे की इच्छा का विकार होते ओ विकार तृप्त करने लगन-प्रथा वगैरे बने और उसमें आनद मनाया लेकिन जैन सिद्धान्त प्रमाणे दृष्टात। जैसे कइक मनुष्यों को चामरोग याने खुजली का विकार हुवा। उसमें पीठमे खाज आने लगी वो हाथ न पहूचने से नदीमें कांकरे थे वहा जाकर कांकरेमें आलोटने लगे यानेपीठ घसने लगे उस घर्षण से खाजमे टेस आने लगा उतनेमे कोई वैद जगलमें से दवाओंकी वनस्पती का भारा बाधके वहां से जा रहा था। उसके हाथमे चिरायता विगेरे की लकडियां देखी। जद वैदसे मागने लगे कि ये लक डिया हमको देवो तो हम खुजली खुजायके आनद पावे। जब उसने कहा खुजाने से आनद मालुम पडता परतु भविष्य मे नुकसान कारक हय। में आपको दवाका काढ़ा पिलाके निरोगी बनादेऊ सो बात उनोंको पसद न पडी उनोंने कहा ये जाने से हमारा खुजाने का टेस चला जावे सो हमारे नहीं करना। सो जैनमत वो रोग मिटाने वाला वैद सरीखा मानना-उनकी कडवी दवा सो ससार से त्याग वृती आत्माको अतमे कल्याण कारी होते मर्वससार के दु खो से छुडायके परम सुख धाममें पहोंचाती और वो रोगको सुख मानने वाले जिमने ससार को सुख माना सो ससार के जन्म जरामृत्यु और आधी व्याधी उपाधी वगैर अनेक दुखों के भुगतने वाले बनते हैं। जन्म

दु'ख जरा दुख मृत्यु दु'ख पुनः पुन' अनेक आधी व्याधी उपाधी दुख समार समारे दु.ख बरमा जागृत जागृत !

अब इम दुखोंमे से किसतरह पार निकलके परम सुखके धामको पहोचना नवकार मत्रमें सो जब आत्माके ऊपर से तत्वों रुपी कर्मोंका बोझा याने नकामा कचरा या मैल हटवाने से उस आत्मा को शुद्ध ज्ञान दर्शन प्रगट होते । जब उसने अभीतक जो सुखकी वस्तु मानके उसमे याने संसार में फसा था, उसको अब दु'ख रुपी हय ये सचा मान आता है । और उसमें से निकलने को नवपद मे से शुद्धज्ञान दर्शन ६ ७ पद है सो आने से फेर और ८ पद चारित्र ग्रहण करता है सो साधुपद फेर ९ पद तपसे कर्मको जलाना । तप जप ध्यान योगमें आता सो अष्टभेद है । जोगक पचम प्राणायामताकेसप्त प्रकार है सकल सिद्धके धाम रेचक पुरक तीसरो कुभक भेद चौथान शातीक समता एकता लीनभाव चौत आन लीनदशा व्यवहार थी होव समाधी रुप। निश्चयतुं चेतन ये होवे शिवपुर(मुक्त)सुप खासाकुं अतिस्थिर करे ताणें नहीं लीवार प्ररवध दढ लायके करे बीज सचार। वायु पाच शरीरमे प्राण समान अपना उदान वायु चोथे। कहो । पंचम अनील अव्यान । प्राणहिये पुन सर्वगत तनमें रहत समान आधार चक्र गती जाणीये तीजो वायु अनाप उदान वासह कठमें सधीमजीए अव्यान पच वायके बीज पुनः पच हींयेइम आन ऐं,पँ,री,व्लौं, क्ली सुधी पचबीज परधान इनके गर्भीत भेदको कहत न आवे मान पच बीज सचार थी

अनहद धुनजे होय। निर्गम भेद ध्वनीतणो योगीश्वर लहेकोय वरण मात्र इणरीजके कमल कमल स्थित आण। भिन्न-भिन्नगुण तहनो शास्त्र थकीमन आण, सकल सिद्धी इणमे बसेमर्ई लब्धी इणमाहि केतीक आजहू सपजे केतीक तो अब नाहीं। वरण नामी मे सचरे मोहम वह उद्योत। अजप जाप ते जाणीयें अनुभव भाव उद्योत। नामी थी हीये सचरे तिहा रकार प्रकास मन स्थिरता लामे हुवे अशुभ सकल्प होय नास। नामी पास हैं कुडली नाडी चक्र नाल हे वाम पिछाडी दमम द्वारका मारग सोई। उलट वाट पावे नहीं कोई मुद्रा पच वध श्रीय-जाणो आसन चौरासी पहिचानो। ये ज्यादा विषय हमारे योग स्थान के पुस्तक मे ज्यादा समज पूर्वक आवेगा।

अब मुख्य मुद्रा वृत्ती या करमों को आत्मा परसे हटाने को ध्यान के लिये। छ या सात स्थान बताये उनको कोई कोठे भी कहते हैं। १ स्थान गुदाके पास नाम मूलाधारचक्र पाखडी ४ अक्षर व श ष. स २ स्थान लींगके पास नाम स्वाधीष्टान चक्र पाखडी ६ अक्षर ब भ. म य र ल. ३ स्थान नामीके पास नाम मणीपुर चक्र पाखडी १० अक्षर ड ढ ण त. थ द ध न प फ ४ स्थान हृदयमे नाम अनाहत चक्र पाखडी १२ अक्षर क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ५ स्थान कठमें नाम विशुद्धाख्य चक्र पाखडी १६ अक्षर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ६ स्थान ललाट नाम आज्ञा चक्र पाखडी २

इ. स ये तत्वों और रंगोंमें हय। उस उस कर्मों को ध्यानी ध्यान से हटावे जपसे हटाये और तपसे जलावे इस परमाने कर्मों को हटाने मे साह्यकारी हय। सारे जगतका सार नव पदों मे भरा हय।

जब मनुष्य आत्मा शुद्ध दर्शन ज्ञानको पाता तब चरित्र ग्रहण करता उस वखत भी उनोपर कर्मोंका बोझा ज्यादा लपटा रहता वो भी कालापन फेर ज्ञानपर भी ज्यादा आछादन होनेसे अ ग्रास उस कारण से कालापन मानाजाय। फेर तपजप ध्यान द्वारा ओझा होताजाय सफाई बढती जाय वैसी ऊची पदनोपर आवे और रंग बदले काले मे से हरे पने मे आवे। और सारे दुनिया को पढाने लायक ज्ञान पैदा होते उपाध्याय पदपर आवे। फेर तप जप ध्यान द्वारा कर्मों का पडल खसकते। साफ होते पीलापना कंचनवर्ण बने और सारी दुनिया को उपदेश देने लायक और वाद विवाद मे समझाने लायक बने फेर वो भी पडलमाफ हो जाने। आठ कर्म ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनी, अंतराय, नाम, गोत्र, आयु, वेदनी
१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
ये पाच तत्वोंके भेद आठ कर्म छ लेश्या भी रंगोंसे बनती। कृष्ण नील कापोत पीत पद्म शुक्ल जैसे ऊंच भावना बने
१ २ ३ ४ ५ ६
नवे कर्मोंको आने न देवे जुने कर्मों तपजप ध्यान द्वारा खलास करे जब पहिले चार कर्मोका नाश होनेसे केवलज्ञान सफेद

वर्ण आता है उनको ही सर्वत्र रहते। उनोको सारी दुनियाके
दरतीलय, मव जीवोका पुछने आवे अनेक भवोका हाल सुख
दु ख छुटनेका रास्ता वीगेरे,बतावे। अनेक शक्तियाँ पेदा होती।
देवताओं करोड़ों सेवा में हाजर होते। अनेक प्राणी वहा आने
वाले को जन्मान्तरों का वेर मिटाके शांति पाते। ज्यादा हमारे
श्री पार्श्वनाथ चरीत्र देखो। वहा से बाकी चार कर्मोंका भी
नाश हो जाने से सिद्ध पद लालवर्ण परम ज्योती मिलजावे।
सार समार के दु ख से छुटजावे।

सो इस नवकार नवपद से जगतकी उत्पत्ती उसीमे ही
रमण उसीमे अनेक दु:खके कारण उसमें से छुटकर मुक्ति
पानेका रास्ता बहोत सक्षेप से बताया। विस्तार करने जावे पार
न आवे मूल विद्वान् वर्गको समझने को इतना काफी है। अब
'नवकार नवपद' दरेक का गुण कोई भी धरम वाला इस गुणकी
मान्यता से बाहर नहीं जा सकते।

१ नमो अरिहंताण- अर्थ 'नमो'= नमस्कार हो,
'अरि'=शत्रुको, हंताण'= हनने वाला। इसका खुला अर्थ
होवे. "शत्रुको मारने या जीतने वालेको नमस्कार हो।"
हिन्दुओंके दसों अवतारोंने शत्रुको मारने के लिए अवतार
लिया जगजाहिर है। लेकिन वो एक नाम है। यहां इसके
पेटे में जितने बलवान हुवे, लाखों, करोडों अब जो पार
निगर के इसमें आजाते हैं। वास्ते ये पदकी ताकत उनसे
एकदम ज्यादा होती है। शत्रुसे हारने वाले को कोई धर्म नहीं

मानेगा। २ नमो सिद्धाण, अर्थ नमस्कार हो सिद्धोंको। ये पदको सारा धर्म मारी आलम मानती। ३ नमो आयरियाण, अर्थ नमस्कार हो आचार्यों को। ये भी आचार्य दरेक धर्ममें है और मानते हैं। ४ नमो उवज्झायाण, अर्थ नमस्कार हो उपाध्यायों को याने पढ़ाने वाले को। दरेक धर्म में है और मानते हैं। ५ नमोलोए सव्व साहूणं अर्थ नमस्कार हो लोकके सब साधुओं, को। ये भी दरेक धर्मम साधु या सत या फकीरके नामसे प्रख्यात है और सब धर्म मानते। ६ नमो नाणस्स अर्थः नमस्कार हो ज्ञानको। इस पदको सारे धर्म क्या मारी दुनिया आस्तीक और नास्तीकोने भी अपनाया हय। ७ नमो दसणस्स अर्थ नमस्कार हो दर्शन याने देखने को। दरेक मतवाले ने अपनी लाइन से देखा है परतु वो पद तो मजुर करने ही पडेगा। ८ नमो चारित्तस्स, अर्थ नमस्कार हो चारित्र को। दरेक धर्म वाला अपने अपने मतानुसार चारित्र पालना मजुर करता है। ९ नमोतवस्स, अर्थ नमस्कार हो तपको सो तपश्चर्या दरेक धर्ममें कोई न कोई रीतसे लिखी है।

अब ये नवपद के मुल पांचपद उसका प्रथम अक्षर असि आ उ सा से ॐ बनाया हय और ह्रीं में चौवीस तीर्थङ्कर समाते, वास्ते उस नवपद के यत्र मडल में ह्रीं दिया हय किस तरह समाये वो ग्रन्थ ढुढने से हाथमें न आने से विवेचन नहीं किया। अब मिलने से जैनमय जगतमें दिया जायेगा।

मालाके १०८ मणके का कारण, तो भी सिद्धान्त परमाणे ये

पाच पदके गुण हय। अरिहत के १२, सिद्धके ८, आचार्य के ३६, उपाध्यायके २५, माधुके २७ इम परमाने १०८ हुवे इम परमाने जैनधर्म असल पुरातन हय। इसीमें से निपरीत करणीसे अलग अलग फाटे फुटते गये।

यंह फाटे की उत्पत्ती-भरत चक्रवर्ती के वखतमें इनको धर्म ध्यान करनारे के हिसाब से पोंमत रहे। परवारा भोजन मिलने से सख्या बढने लगी। जब परीक्षा करके धर्म ध्यान की क्रिया में पास होने वाले को और ज्ञान दर्शन चारित्रमय हय ये ओलखाण के लिये तीन रेखा की जनोई पहेनाई गई। और माहन नाम से प्रसिद्ध हुवे। मा=नहीं हन=हननारे, नहीं मारने वाले, जीव हिंसा नहीं करनेवाले। तब पहिले नगरमें साधु दुसरे नगर मे साध्वी, तीसर नगर में ये ठेठ नवमें तीर्थङ्कर तक माने जाते रहे। नवमे तीर्थङ्कर के कुछ टाइम बाद साधु साध्वी का यश अटकजाने से धरमके लिये इनोंकी पुछ परछ होने लगी।

अब इनोंने मोका देखकर अपना स्वार्थ साधते जहां वहां हमको देने मे पुन्य मानते, लोकों और राजा महाराजाओं के पसदगीका ससार मे ही सुख मनाया, कमलासन पर चतुर्मुख ऋषभदेव भगवनी निकला था उसको ब्रह्मा ठहराया और ये माहन में से ब्राह्मण बने और उसमें ससार पक्ष और स्वार्थ का फेर फार हुवा ईश्वर को कर्ता, फेर ईश्वर की मार उतारने अपन सरीखे रखडते भटकते मनाये। जैनोंके २४ से मेल

लानेको मात मनु आठमें ऋषभदेव ऐसो खींचातांचके २४ का मेल किया उसवखत कोर्ट सामने पड़नेवाला न होनेसे इनोंका मनोकल्पित सर्वत्र फैल गया। फेर जैनके १० मे तीर्थंकर हुवे इनोंको फेर त्याग मार्ग बतलाया सो समर्ग पाने वाले उसमें जाते लेकिन काल प्रमाण जीवोंका संसार तरफ झोंक ज्यादा होने से समय समय पर तीर्थंकर होते गये वैसे बोधपाने उसको अपनाने वाले निकलते गये, तब भी वो पीठ ज्यादा रही और उसमें विद्वान होते गये,उनोंने फेर फार करते फाटे फुटे पुराण और स्मृतिया भी हुई। लेकिन अब सायन्स विज्ञान के जमाने में परीक्षा होनी चाहिये। अभीतक जैनों के विरुद्ध इनोंके शास्त्रोंमें बहोत बनावटी बात मालुम देती है। उसका एक दाखला समयोचित धारके लिखता हू। ये बात ४५ बरस आगे की हय। हम गृहस्थाश्रममें थे, अब जामनगर से कच्छ की बोट मे बुझ जाने को आरहे थे और हिंदू धर्मके वैरागी देशमे साधु कच्छ नारायण सरोवर की यात्राको जारहे थे। बोटमें अरस परस वार्तालाप मे आप जैन हय; हमारे शंकराचार्य ने जैन के महान आचार्य से वाद विवाद कर के जीत लिया तब उनकी स्त्री कहने लगी उनोंको जीतनेसे आपकी पूरी जीत नहीं होती, मै उनकी अर्धांगना हूं मेरे को भी जीतो तब जीत मानी जायगी। शंकराचार्य बाल ब्रह्मचारी थे-स्त्रीका वहेवार जानते नहीं थे-उमसे उनसे मुदत मागी। फेर कोई राजा मरगया जब अपना सरीर एक कोटडी मे लापना से सभालने का अपने

शिष्यों को कहके अपने को राजाके शरीर में प्रवेश किया। और उसकी राणीसे स्त्रियोंका व्यवहार सीखके फेर अपने शरीरमें आकर आचार्यकी स्त्रीसे वाद करके उसको भी हराया। ये अपने शास्त्र बात उसने कही। जब ऐसी अनेक बात लिख चुके हैं सो ये बात बांचकर जैनोंपर खोटा आक्षेप करने तयार होते। उसमे भी कोई सत्य पाजाता सो जैन बनजाता। जब फेर 'हस्तिना ताड्य मानोपि नगच्छति जैन मदिरं' ये लिखना पड़ा। जैसे कोई जुनी दुकान में से फुटकर भागीदार या नोकर निकल के सामने नवी दुकान लगावे, तब जुनी दुकान में ग्राहक को न जाने के लिये खोटी रीतसे बहेकावे-ये हिंदू और जैनका कीसा हय। कारण जैन लोक स्त्रीके सतधर्म महा दोष मानते धर्मचुस्त ग्रहस्थ भी ब्रह्मचर्य का नियम करलेते साधु को स्त्रीका पछा छु जाय उर भी दड आता हय तो आचार्य को स्त्री कहा से आवे? जैनोंका त्याग मार्ग उसमें समार मार्ग कहासे लगाया? कितना हद बाहर का जुठाना लिया हय-ऐसे जुठ चलाने वाले जगत के और ईश्वर के सपूरण गुन्हेंगार हय और स्वराज मिलने अन्याय करने वाले अधिकारी भी इनकी जाच होनी चाहिये। और सरकार जब पाकिस्थान में मुस्लिम वस्ती ज्यादा होने से हिन्दुओ को अन्याय होने से सरकार उनको मदद दे रही जब यहां हिंदू धरमवाले जैन पर अत्याचार करे तो सरकारने जैनों को टेका देना चाहिये। रतलाम सरीखा न होना चाहिये। जैन धर्मका विधान एक दूसरे से उलटा होने से जैनको हिंदु

देते मे लेना चाहिये इतना लिखके मेरा लेख बन्द करता हु- जब इसफानी दुनियापर मोतका पंजा पसर रहा और किस तरह सपरता उमपर से खुदाके घर अन्यायका दंड भुगतना पड़ेगा, ये सपजके अन्याय करने प्रभुसे डरो क्योंकि इसमें छोटी बडी उमर नहीं देखता अकस्मात लेजाता है उस वखत आगे से किया हुआ धरम और अधरम साथमें आता है। जानो है चोकस मानो कोई अमरपटो लेके आयो नहीं।

मोतकी से कबीरजी

कालका अजब तहाकारे, तु क्या जाने लडका वे ॥ टेक ॥
नवमी मरगये दसमी मरगये मरगये सहस्त्र अठ्यासी ॥
तेतीस कोटी देव मरगये। पड कालकी फांसी ॥१॥कालका०१॥
पीर मरगये पेगम्बर मरगये । मरगये जंदा जोगी ॥
जती सती सन्यासी मरगये ॥ मरगये वेद न रोगी ॥काल०॥२॥
तीन लोकपर छत्र विराजे । सो खुदा कुंजविहारी ॥
कहत कबीरा सो भी मरगये । रैयत कौन विचारी ॥का०॥३॥

सबोकी बानी

कालका क्या भरोसा है नमालुम कब आवेगा॥ धरा रे जायगा- लसकर, पकड तुजको ले जावेगा ॥१॥
तीतर को बाज पकडे हैं, मेंडकको साप गलता है।
बिल्ली चुहा जपटती है, काल ऐसा दबावेगा ॥२॥
कहा है वैद धनवंतर, कहां लुकमान जहा में है।
मिलाया खाक मे उसको, तु क्या बाकी रहजायगा ॥३॥

कहां है बादशाह बानर और सिकंदर कहां है गचराणा सामत।
और नामधारी बडे बडे कन्दर ॥४॥
एसे भी न बचने पाये तो तु क्या गर्व धराता है।
जैसे सिंह हिरन को झपटे वैसे तुझे काल झपटगा ॥५॥
नहीं माता पिता भाइ आ तुजको न छुडावेगा।
नहीं ग्याती नहीं गोती आ तुजको न बचावेगा ॥६॥
चले नहीं जोर जादुका चले नहीं जोर बाजुका.
पडे त्रिलोकमें डन्का तु जाके कहां छुपावेगा ॥ ७ ॥
अर जीमसी धमक आगे कापते च ऱ ओर सुरज। नाकी न रह
गये कोइ भी ओरज। फीर तु क्या अमर मनाता है॥८॥
करो सत्य धर्म कीया ज्ञानी, हटो सब पापोंसे प्रानी ॥ तो मिले
मुक्ती महारानी तो फीर काल भी ताप खावेगा ॥९॥

इस उपर से वाचने वाले को हमारे गुरुजीओं की विद्वता
॥ ख्याल आजायगा ये नव पद कसोटी रूप (छे) है। इसमें
जैनोंने एक दो के तीन पद अनुमान से घटाय के इस पर-
ाने ओर भी समज लेनेका लीखा है, लेकिन हरेक पदका
॥ जुदा जुदा है। सो इस परमाने कैसा समजा जाय? ॥
। से अनुभव होता है कि आप ही पूरा वर्णन करने में अस
र्थ है। ऐसा समजा जाता है।

और खुलासे औरोंने भी अपनी अपनी कल्पना शक्ती
और युक्ती पुर्वक दीये हैं। उसमें आचार्य श्री हरीसागरसुरी
ी का सबसे बढ़कर है। लेकिन फकत मु चाकरासे आचार्य

श्री तीथ्ट्रसुरी का हमारे से मिलता आया है। उससे हमारी मान्यता को टेका मिलना है। ये भी जती पट्ट परंपरा से आये हुये हैं उससे पुरानी हकीकत जानते हैं फिर ध्यानी भी हैं और हम भी जती पणे मे रहकर आये फिर इतिहास सोधने का पहिले से शौक था उससे ये बात का जानपणा और सामन देवदेवी की कुछ सहायनी है और उसी से और पुस्तकें और पत्रिकाये भी छपी हैं इनोंके मुजासे से सारी दुनीयां और चउद पुरव का सार तो क्या लेकीन सारी दुनियां इयमें पांच तत्त्वों मे समाती हय। हरेक धर्म आमतौर औ नामतौर को सबको मानना पडेगा–फेर योगोद्वहन हालके उपधान को घटाते हैं परंतु पहेले साधु जगल में विचरते थे जब वहां अभी सरीखा मालपाणी कहां खाने मिलता था लेकीन ध्यान के योग कुढी योगद्रोवहन कहते थे दाखला (स्पष्ट भेद है जोग के इसी पुस्तक पाने ६० लाइन १२ से देखो) और उसी से ही लब्धीयां और ज्ञानप्राप्त होता था अब महेरों मे ध्यान के बदले पैसे वालों की खुशामद करनी ओर मानना करने का मोह बढा ओर पचखाण मे नीवी में लुखा खाने के बदले निवियाना बनाय के माल पाणी खाने सीरे। ऐसी और भी बहोत पोलें घुस गई हय जो हटाने की बहोत जरूरत हय सोमेशरनामें की कुछ नख्ल आगे आवेगी उस पर विचार करें (जैनी श्वेताम्बर लोक) ओर हमारे धरम की सचाई सायन्ससे घटाता हुं पानीमे हमारे सिधांतोंम असंख्य

जीव बताये सो प्रत्यक्ष देखने वाले जुठा माने. लेकीन पत्र 'श्वेताम्बर जैन' १ जुलाई सन १९५२ का लेख (पानी छान कर पीजीये. वर्तमान समयके सुप्रसीद्ध विद्वान वेत्ता श्री केप्टन स्वर्सोबुर्सवी साब ने दुरबीन) (सुक्ष्म दर्शक यन्त्र से) देखकर फोटोलीया है श्री० के० स्वर्सोस्वी सा० ने इन सुक्ष्म जतुओं की सख्या पानी की एक छोटी सी बुद में ३६४५० बतलाई है,'सिद्ध पदार्थ नाम की पुस्तक जो इलाहाबाद गवर्नमेंट प्रेस से प्रकाशीत हुई है उसमें केप्टनसाहेबका पुरामव और चीत्र भी दिया है (जैन मित्र से)

और हमारे नवकार के पांच तत्वों के विज्ञान को हाल नवी सोधों में भी टेका मील रहा हय उसका उदाहरण. पेपर गुजरात समाचार ता०२४-१ ५८ का लेख आ सदीनो सउथी मोटोधरतीकप (रोइन्र) मोस्को ता०२१ मा सदी नो अत्यार सुधीनो मोटामां मोटो धरती कप मोंगोलीयामां अलताई पर्वत मालामां थयोछे जेने परिणामे केटलाक थथारे स्थलीए आठ आठ माइल लांबी एवी नदीयो बनवा पामीछे एस्थलनो देखाव पृथ्वीनी बालयावस्थामां ज्यारे बधु वायुमायी पन रुप थतु हतु ते वखत ना जेवो हतो। ये अपने नवकार (नवपद) पांच तत्वों में घटायें हय (घटते हय) ये असख्य बरसों की अनेक जुगों की केवली ने बताई हुई बातें को हालका विज्ञान भी टेका दे रहा. ये जैन धर्म की सच्चाई ओर अनादीपुर बार हो रहा है फेर यही पुस्तक के पाने १ में

(यही पुस्तक के पाने १ में) इतिहास प्रेमी ज्ञान सुंदरजी सो पीछे से देवगुप्तसुरी नाम से प्रसीद्ध है-उनोंने श्री पार्श्वी सघको उपधान प्रापत के उत्तर में पाने ९ के मथाले लीखान है। वर्तमान मे जो उपधान चलता है इसके लीये मेरी मान्यता थाज से ३२ वर्ष पुर्व मेहरनामा मे व्यक्त करदी है यहां से देख सकते सो उस बखत तो वो पुस्तक हाथ न आया लेकीन स० २०१४ माहा महीने मे मु० अमदावाद में मुनीराज हेम विजयजी से श्रावक माणेकलाल मारफत प्राप्त हुवा उस लीये उनों का आभार माना जाता हय उस पुस्तक के पाने कुल ८१ में उनोंने श्री सीमंधर स्वामिको विनतीरूप चोंढी, हुंडी पेठ पर पेठ ओर मेहरनामा ढाल १ से ३१ तक लीख के पुरा कीया है लेकीन हमारे को हमारे लेख के मुदासाथ लीया कारण ज्यादा टाईम ओर अवकाश न होने से फक्त ढाल ३ ४-५-६ ७ ओर २३ २४ का उतारा करके वाचक वर्ग को सतोष मनाया हय उसमे भी गुणग्राही सत्य सोध के ग्रहण करेंगे यही विनती हैं कारण शास्त्र में चार दोप छोड़ने के बताये सो पहीले वीरविजय जी महाराज उनोकी बनाई हुई ९९ प्रकार की ६४ पुजामें चार दोपे क्रीया छुडाणी योगावचक प्राणीने वो चारदोप दग्ध सुन्य-ओर अविधीदोष. ओर अतीप्रवृती-ये क्रीयाए लाभ के बदले हानीकारक होती है. अमृत क्रीया के बदले विप ओर गरल क्रीयांए बनती है. ओर तपजप ध्यान मोक्ष जाने की लाइन ध्यान मुद्राउडा के मलती मलती नर्क

क्रीयाए चला रहय इससे निन्हवों के पिलान म मिल सकने यहा ग्रंथ पढनेसे इनोंका विवरण खुलासारार चिदानन्द कृत स्वरोदय प्राणायाम ध्यानमें देना होगा। चैत्यवासी अधिकार (मिस्रलामापाना १०-१२ से) सुत्र महानीसीथ के आधार से

दुहा

दुष्टकाल अतिआकरो-नमीले फासु आहार
नीर्बल मनमुनीराजना लोपेमर्यादकार-
केई गया परलकर्मा-रालवा सयमसार
जे पाछल मुनीवर रहा-सुण तेना समाचार

ढाल ३

पार तर्या पाछल रहा जेथे कीधोहो जिनचैत्य (देहरा) मा वास
आठमो व्यासी वर्ष० सासन हुओहो आणे भस्मीरास सुणो
सीमधर० ए आवणी ॥ १ ॥

तप सयम दुरे कर्यो दुर कर्योहो साधुनो आचार
बाडा बाध्या आपणा तुष्याहो लागी अपरपार सु० ॥ २ ॥
द्रव्य लिंगी द्रव्य रालवा माडीहो देव द्रव्य दुकान
नैहीत द्रव्यने वापरे अंधा अंधहो मच्यो अज्ञान सु० ॥ ३ ॥
वास कर्यो मुनी चैत्यमा गृहस्थहो छोडीसार समाल
द्रव्य करें मुनी एकठु देवनामेहो पीजारीजाल सु० ॥ ४ ॥
धर्मशाला ने उपासरा नवा घरपहो बाध्या अनेक
मालीकीरासी आपनी पोतेहो करे वेनी देख रेख सु० ॥५॥

कल्पीत क्रीया मनावीने सावद्य होकरेउपदेश
अंजन शलाका प्रतिष्टा विसे सयम न राख्योलेश ॥ सु०॥६॥
काव्य बनाव्या पुजातणा सावद्य न जाणे शंक (शङ्का)
माया ममतामां पडया-हाथी हो जाणे पडयोपंक ॥ सु० ॥७॥
मृदंग ताल बजावना-केंइ खाउँहो नित्य चंगा थेट माल)
गादीतकीया बिछावना-ओढवा हो दुसाल साल ॥ सु० ॥८॥
रोसनी करावे रातना मंदिरमां हो नचावे लोक ॥
निरकुश दयाविना-धर्मनामे हो करे प्रचार ॥ सु० ॥ ९ ॥
पद्माउचणी रचना करे-गाजे वाजे आवेने जाय ॥
धाम धुम करे घणी सासन हो दीधोलोंपाय ॥ सु० ॥ १० ॥
सघ साथे करे जातरा साध्वीयोहो साथे चाले नार–
धर्मनामे अधर्मनु पासत्था हो माडयोप्रचार ॥ सु० ॥११॥
तप तेलादी करावीने उजमणे हो लेवे रोकड दाम–
गौतम पडयो पुरानो सु लगुहो जाणो आतमराम॥सु०॥१२॥
उपधानना नामथी-नवी नवी हो, क्रीया दीधी थाप–
रुपीया लेवे रोकडा-सासनने हो लगाडयो पाप ॥ सु०॥१३॥
साधुना उपासरे हो स्थापे हो वीतरागीदेव–
अठाई ओछव करावता नाटकीया हो पाडी खोटी टेव॥सु०॥१४॥
ईत्यादि सक्षेपथी विस्तारे तु जाणे नाथ–
सों वर्ष सुधी चालीयो मोटो हो चैत्य वासीनो साथ॥सु०॥१५॥
देव गुप्त देवर्द्धिगणी केई मुनीवरी सासनसार
हरीभद्र सुरी हुआ केई मुनी हो कर्यो क्रीया उद्धार॥सु०॥१६॥

अत्र न तिमिर इठावीने-तप संयमे हो थया उजमाल-
पुस्तकारुढ आगम कर्या-जेणे आप्यो हो काइ पडतो काल ॥ सु० १७
इस्तर काल क्रीया रही चैत्यवासीनो वध्यो परिवार
तेरसो वर्षो प्रभु पछी, चोरासी गच्छना सुणीये हो
समाचार ॥ सु० ॥ १८ ॥
गच्छना नाम जुदा पडया मांहोमांइ हो घणो धर्म सनेह
पण कर्मीयुगी आगता तेहना हो समाचार छे एह ॥सु०॥१९॥
समाचारी जुदी जुदी-जुदा जुदा होसहुना र्नेनाण (एथाण)
मदिर उपासरा जुदा जुदा-जुदा जुदा हो श्रावक पीछाण सु० २०
ग्रथ रचना जुदी जुदी पाकी बांधी हो पोतानी पाल
कोइ निंदक कदाग्रही मांडी बेठाहो ममतानी पाल ॥सु०॥२१॥
सिद्ध सुरी मलमसुरी जगचंद हो हेमसुरींद्र
पासरथानु मद चुरता भुमंडल हो विचरे मुनींद ॥सु०॥२२॥
कुमारपाल प्रतिबोधीने-जैनधर्म कीधोहो उद्योत
देस अढारे दयापलेरे हीर सुरी हो अकबर बोधान ॥सु०॥२३॥
गछ तणा झगडायणा पक्ष पड्या हो मांडी दुकान
लींगधारी सीथील थया पामन्या हो माच्यायरतान ॥सु० २४।
विक्रम पंदरसे आठमां-लुपक लोकहो कीधु तोफान
पदरसे एकत्रीसमां चाली हो लुपक दुकान ॥ सु० ॥ २५ ॥
प्रतीमा उत्थापी पापीये आगम मान्याहो एकत्रीस
वुक जेम मालकीया करे-दया दया हो पाडे बुम
रीस ॥ सु० ॥ २६ ॥

एक बाजु यती शिथील थया बीजी बाजु हो लुपक नोजोर
मत्य विनय सत्य रामता लुपक्ना हो• कीला दीपातोड ॥मु०२७
वीर परंपरा मत्यनी विजयथी हो सनेगी नाम
लुपक थी टुढक थया आगल लखुं बनेनाकाम ॥मु०॥२८॥
सरत सतर आठमां लवजी हो लुपकनो साध (साधु)
मोटुँ बांधी ने निकल्या लींगपल्टी हो कीधो उन्माद ॥मु०२९॥
सत्य मार्ग थी हो चल्यो वध्यो हो पामत्वाप्रचार
प्रवृती रहु वने हणी थोडामां हो घणा समाचार ॥मु०॥३०॥

ढाल २ नो तात्पर्य

जेचैन्यवासीनी प्रवृती लखीछे तेमां कांइ आश्चर्य न पामवुं- जीव यथाकर्माधी-छे-परंतु खास लखमा रासवु की ते प्रवृती अमारामां न आवेजाय भगर कांइ होयतो तरत काढी झुकवानुँ प्रयत्न करवुं ।

आचार्य अधिकार• पाना-१३ थी १५ सुत्रोकेनाम कीमआधारसे वृहत कल्पसुत्र गाथा १. २ व्यवहारसुत्र गाथा ५• ३ आवश्यकसुत्रगाथा ६• ४ दशाश्रुत स्कँध-गाथा ६• ५व्यवहारसुत्र गाथा ११ ६निशीयसुत्र गाथा ११ व्यवहारसुत्र गाथा १२

दुहा

श्रमण जीन सासन तणा पदवीधर गुण खाण
स्थंभ कह्या जीन धर्मना स्वअनेपरमतनाजाण ॥ १ ॥

सारण वारण चोयणा प्रतीचोयणा करे तेह
सघ चलावे आणमे ते सुरी - गुण गेह ॥ २ ॥

ढाल ४ थी देसीउपर परमाणे

आचार्य उपाध्यायजी-प्रवर्तक हो थवीर गणी जाण
गणाव छेदक गणधरु सात पदवी हो कही रत्ननी खाण॥सु० १॥
सात रत्न चक्रवर्तीना करे हो चतुरदीसी अंत
गुण गौरवा पदनी धरा जेणे तार्या हो जीव अनत ॥सु०॥२॥
जे पदवी नारक हती श्रमणाना सुणीये समाचार
गुण हीणा गर्वे चढया पडया हो ममत्व मझार ॥ सु० ॥३॥
स्वमतने जाणे नहीं केम होये हो परमतना जाण
जाणे थोडु ताणे घणु-खाली हो मांडी खेंचाताण ॥ सु० ॥४॥
भाष्य देखो व्यवहारनो विस्तारे हो खोलीने नेण (आंख)
अगीतार्थने सेवता खोट आवसे हो वीरनावेण ॥ सु० ॥ ५ ॥
नहीं योग नहीं योग्यता बनी बेठा हो आचारज पाट
सुरि छत्रीस गुणे क्यां रह्या क्यां रही हो गणी सपदा
आठ ॥ सु० ॥ ६ ॥
पाटीदार पटेलीया कोई हो ब्राह्मण माली भाट
अग हीना फेर मांजरा नहीं शोभे हो वीरने पाट ॥ सु० ॥ ७ ॥
उंचो धरे आचारने क्रीया हो धरे कष्ट समान
आचारज थया अमरिया नहीं क्रीया हो नहीं रह्योज्ञान ॥सु०८॥
मोटी उपाधी धारवता रवीताव हो राखे दो चार
क्यां कोरीक्यां चीवरी-(झोला) बनेडुबे हो जलमझार॥सु० ९॥

परस्पर छापां छपावता स्वश्लाघा हो पर नींदक तेह
पैसा खरचे धाखीया दृष्टी रागी हो नहीं धर्म स्नेह ॥सु०॥१०॥
निशीथ आचारज भणया विना. अथवा हो भणीने जायभुल
पदवी देवी कल्पे नहीं जुओ हो व्यवहारनु मूल ॥ सु० ११ ॥
हाथी तणा बोजो लेह हो खर उपर मूल
पदवी देवे अयोग्यने-नहीं जुवेहो जाती ने कुल ॥ सु०॥१२॥
पदवी देवे अयोग्यने नहीं छोडावे हो सध
दड तणा भागी होवे जुवोहो व्यवहारनो रग ॥ सु० ॥१ ॥
पोताना शिष्यमाने नहीं सु करसे हो सासननोराय
आचार्य घर घरतणा रह्यो हो निक्षेपो नाम ॥ सु० ॥ १४॥
ज्ञान योग उपधानना नामलेई हो भेळु करे पाप
लानो लानो करताफते-मजकलदार हो वेठा अपे जाप ॥सु०१५॥
मर्या पछी पुस्तक नीकळे चेलाहो वेंहचीने खाय (लेवे)
नहीं तो रखावे धाणीया अथवा कोरटमां जाय ॥ सु० ॥ १६ ॥
चरण स्थपावे तेहना-मुर्ति हो धरे मदीर बीच (घरमां)
छबीयो चितरावे बहु मुली-स्वश्लाघा हो करे ने नीच॥सु०१७॥
तप सयम आतम बळे केई कीधा हो जेणे जैन अनेक
तेहनी खावे रोटीयो- लडावे हो मांहो मांही एक ॥ सु०॥१८॥
अभीमानी झगडा करे सु आशा हो नवाकरे जैन
मम लजीया कहा नाथ जी जुओहो आगमनावेण ॥सु०॥१९॥
उत्तमजो उचा छोडे, नीचाने हो लेने आपणीपास
कहवी दवाई गुण करे शासनप्रेमी हो करे अरजी खास॥सु०२०॥

लज्जा रारो पदवी तणी मांन शुती हो आयमपाप्रेम-
मामननी सेवा करो पामो हो जलदी सीव जेम ॥ सु० २१॥

ढाल ४ थी नो तात्पर्य.

ज्यांसुधी आचार्यना गुणनी योग्यता न होय त्यांसुधी आचार्य पदवी नेज आपवी अने लेवा वालाने पण पुरो विचार करवो अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपवी तथा लेवी अनेसपने शासमार्गप्रवर्तावयो.

गणी पदवीकार पाने १४-१६ क्रिम सुत्रोंके आधार से नाम
१ नीशीथ सुत्र गाथा २ २ स्थानायंग सुत्र गाथा ११
३ व्यवहारसुत्र गाथा ११

दोहा- गुण गीरवा गणी करे गच्छ तणा सुभ काम
हीनागमोमां दीसे नहीं पन्यासोना नाम ॥ १ ॥
के थाय सवेगी नामना नहीं सवेगनो रंग
पदवी तणां झगडा करे लई लई ग्रहस्थी संग॥२॥

ढाल ५ मी देसी आपल परमाणे

समिती गुप्ति जाणे नहीं सावद्य निरवद्य हो नहीं होवे हो मान
दोष जाणे नहीं आहारना नहीं हो भाषानु ज्ञान ॥सु०॥१॥
हृष्ट पुष्ट साधु बन्या माल खाई हो बनीया मस्तान
जुठा योग बहन करे कलीयुगी हो पाडयु तोफान ॥ सु०॥२॥
नव तत्व नहीं आवडे नहीं हो दस वैकालीक ज्ञान
योग वहे भगवती तणा भरतमांहेहो मचीउं अज्ञान ॥सु०॥३॥

परस्पर छापा छपावता स्वश्लाघा हो पर नींदक तेह
पैसा खरचे वाणीया दृष्टी रागी हो नहीं धर्म स्नेह ॥सु०॥१०॥
निशीथ आचारंग मणवा जिना, अथवा हो भणीने जायमुल
पदवी देवी कल्पे नहीं जुओ हो व्यवहारनु मूल ॥ सु० ११ ॥
हाथी तणा बोजो लेइ-हो घर उपर मूल
पदवी देवे अयोग्यने-नहीं जुवेहो जाती नेःकुल ॥ सु०॥१२॥
पदवी देवे अयोग्यने नहीं छोडावे हो सघ
दंड तणा भागी होवे जुओहो व्यवहारनो रग ॥ सु० ॥१३॥
पोताना शिष्यमाने नहीं सु कारसे हो सासननोक्षाम
आचार्य घर घर तणा थयो हो निक्षेपो नाम ॥ सु० ॥१४॥
ज्ञान योग उपधानना नामलेई हो भेला करे पाप
लावो लावो करताफरे मजबलदार हो बेठा जपे जाप ॥सु०१५॥
मर्या पछी पुस्तक नीकले-चेलाहो वेंहचीने खाय (लेवे)
नहीं तो खावे वाणीया अथवा कोरटमां जाय ॥ सु० ॥ १६ ॥
चरण स्थपावे तेहना-मूर्ति हो धरे मंदीर बीच (बचमां)
छबीयो चितरावे बहु मुली-स्वश्लाघा हो करे ने नीचा॥सु०१७॥
तप सयम आतम चले केई कीधा हो जेणे जैन अनेक
तेहनी खावे रोटीयो, लडावे हो मांहो मांही एक ॥ सु०॥१८॥
अभीमानी झगडा करे सु आशा हो नचारूरे जैन
मम लजीपा कहा नाथ जी जुओहो आगमनाबेण ॥सु०॥१९॥
उत्तमजो उचा छोडे, नीचाने हो लेवे आपणीपास
कदपीदयाई गुण करे शासनप्रेमी हो करे अरजी खास॥सु०२०॥

लज्जा रारो पदवी तणी मांन धुनी हो आपममतिप्रेम-
सासननी सेवा कजो-पावो हो जल्दी सीव जेम ॥ गु० २१॥

ढाल ४ थी नो भावार्थ.

ज्यांसुधी आचार्यना गुणनी योग्यता न होय त्यांसुधी आचार्य पदवी नेज आपवी अने लेवा वालाने पण पुरो विचार करवो अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपवी तथा लेवी अनेसघने शांतमार्गेप्रवर्तावयो

गणी अधीकार पाने १४-१६ जिन सुत्रोंके आधार से नाम
१ नीशीथ सुत्र गाथा २ २ स्थानायंग सुत्र गाथा ११
३ व्यवहारसुत्र गाथा ११

दोहा- गुण वींगवा गणी करे गच्छ तणा शुभ काम
हीनाचारीओमां दीसे नहीं पन्यासीना नाम ॥ १ ॥
के पाय संवेगी भावना-नहीं सवेगनो रंग
पदवी तणा झगडा करे लई लई ग्रहस्थी संग॥२॥

ढाल ५ मी हसी आगल परमाणे

समिती गुप्ति जाणे नहीं भावय निरवद्य हो नहीं होवे रे भान
दोष जाणे नहीं आदारना नहीं हो आपानु ज्ञान ॥गु०॥१॥
इष्ट पुष्ट साधु बन्या माल खाई हो बनीया मस्तान
जुदा योग वहन करे कलीयुगी हो माडयु तोफान ॥ गु०॥२॥
नव तत्व नहीं आवडे नहीं हो द्रम वैकालीक ज्ञान
योग वहे भगवती तणा भरतमांहेहो थयोछे अज्ञान ॥गु०॥३॥

सुत्र क्रमसर वाचना उन्क्रम हो कह्यो दड निशीथ
पाप उदय पन्यासजु तोडी हो जीन सामनरीत ॥सु०४॥
दाडा बाध्या पन्यासजी नीजा हो नहीं करावे जोग
मायाजाल वेठामाडीने सासने हो लगाव्योरोग ॥सु०५॥
आगम वांचता उंची धरी पामरथा हो क्रीया दीधी स्थाप
पुस्तक धर्या भंडारमा कोण वाचेहो पन्यासनो बाप ॥ सु०६॥
भेद करे गच्छ माहे ने सघ माहे हो करे खेंचाताण
दुकान जमावे आपनी पदवी पाम्या हो नहीं पाम्या ज्ञान ॥सु०७
पुण्योदय साधु थया-आधाकर्मी हो खाई करे पुन्यनास
पाप पुरा उदय आवीया मातु होते हो पठी पन्यास ॥ सु० ८॥
[illegible] लखु हो मारा साहीबा-देरा देखी हो लागे चेपी रोग
एक बीजाथी आभल पडे नहीं देरा हो योगा योग ॥सु०९॥
अंदरनु रहस्य हवे सुणो-थई पन्यास हो माहे उपधान
माल पाणी नाणुमले महिला मली हो करे सन्मान ॥सु०१०॥
ठाणायग ठाणे आठमें सुनहो व्यवहारने खोल
कहेता तो गुणमणीतणा केम चालेहो, जेपोलम पोल॥सु०११॥
जो सघ जो नीर्णय नहीं करे-थासे हो श्री वीरना चोर
मारी फर्ज मे बजावीछे-जुठो हो मत करजो सोर ॥ सु० १२॥
ढाल४नो तात्पर्य जेधी रीते आचार्य पदवी लेछे तेवीज रीतेगणी
समजवा
योगवहन अंगीकार-पाना १६-१८ किस सुत्रोंके आधार से नाम-
१ सुयगडांग सुत्र गा० १ २ महानिशीथ सुत्र गाथा१

३ अग चुलीया सुत्र गाथा १ — ४ उत्तराध्ययन सुत्र गा. १
५ भगवती सुत्र गाथा २ — ६ पन्नवणा सुत्र गाथा३
७ नदी सुत्र गाथा ३ — ८ व्यवहार सुत्र गाथा ६
९ भगवती सुत्र गा०१० — १० अणुनोगवाईसुत्र गा १०
११ व्यवहार सुत्र गा ११ — १२ भगवती सुत्र गाथा १२
१३ समवायांग सुत्र गा १९ — १४ अतगड दसांग गा. २०
१५ बृहतकल्पसुत्र गाथा २१ — १६ व्यवहारसुत्र गाथा२५-२७

दोहा– सुत्र वाचे तप करे योग वहन सस नाम
आगम माहे देखीलो भाखे श्री गुरुस्वाम (जीनेश्वरदेव) १
कल्पित विधी योगनी भोलाथडीयाभ्रम
धर्म आज्ञा वीतरागनी आज्ञा बहार अधर्म २

ढाल ६ देसी आगलपरमाणे

महानिशीथ अग चुलीया उत्तराध्ययने हो दीसे योगनानाम
सत्यमार्ग गोपीकरी चैत्यवासीए हो कर्यु दामनु काम ॥सु०१॥
भगवतीनी वांचना सडसठ (६७) दीन हो मुल पाठ सांजोय
इमणा योग छमासना आगम आणाहो विराधक होय ॥ सु०२॥
पन्नवणा पाछल बनी पहेला हो नहीं होवे योग
देवद्वीगणी नदीरची-त्यां सुधी हो आ नहीं हतो आ रोग॥सु०३
आगम अते एम कह्यु अेटलादीन होउ देमन काल
नेविधी उचीधरी पासत्या हो मांडी ममनीजाल ॥ सु० ४ ॥
गणधर सुचित विधी एक हो जेमांहे हो, कोण आपेसक
गच्छगच्छना जुदी जुदी कल्पीत हो नविहोवे निशक ॥सु०५॥

सुत्र क्रमसर वाचना उत्क्रम हो करो दड निशीथ
पाप उदय पन्यामनु तोडी हो जीन सासनरीत ॥सु०४॥
दादा बाध्या पन्यासजी बीजा हो नहीं करावे जोग
मायाजाल वेठामाडीने सासने हो लगाव्योरोग ॥सु०५॥
आगम वांचता उंची घरी पामत्था हो कीया दीघी स्थाप
पुस्तक घर्पा भडारमा कोण वाचेहो पन्यामनो बाप ॥ सु०६॥
मेद करे गच्छ माटे ने सघ माहे हो करे खेंचाताण
दुकान जमावे आपनी पदवी पाम्या हो नहीं पाम्या ज्ञान ॥सु०७
पुण्योदय साधु थया-आधाकर्मी हो खाई करे पुन्यनास
पाप पुरा उदय आवीया साधु होने हो पठी पन्यास ॥ सु० ८॥
सु लखु हो मारा साहीवा-देखा दखी हो लागे चेपी रोग
एक बीजाथी आगल पडे-नहीं देखे हो योगा योग ॥सु०९॥
अंदरनु रहस्य हवे सुणो-थई पन्यास हो माडे उपधान
माल पाणी नाणुमले महिला मली हो करे सन्मान ॥सु०१०॥
ठाणायग ठाणे आठमे सुनहो व्यवहारने खोल
कहेवा तो गुणगणीतणा केम चालेहो, जेपोलम पोल॥सु०११॥
जो सघ जो नीर्णय नहीं करे-थासे हो थी वीरना चोर
मारी फर्ज मे बजावीछे-जुठो हो मत करजो सोर ॥ सु० १२॥
ढाल५नो तात्पर्य जेघी रीते आचार्य पदवी लेछे तेजीज रीतेगणी समजवा

योगवहन अधीकार-पाना १६-१८ किस सुत्रोंके आधार से नाम-
१ सुयगडांग सुत्र गा० १ २ महानिशीथ सुत्र गाया१

३ अग चुलीया सुत्र गाथा १	४ उत्तराध्ययन सुत्र गा. १
५ भगवती सुत्र गाथा २	६ पनवणा सुत्र गाथा२
▪ नदी सुत्र गाथा ३	८ व्यवहार सुत्र गाथा ६
९ भगवती सुत्र गा०१०	१० अणुतरोवाईसुत्र गा.१०
११ व्यवहार सुत्र गा ११	१२ भगवती सुत्र गाथा १२
१३ समवायाग सुत्र गा ११	१४ अतगड दसांग गा. २०
१५ बृहतकल्पसुत्र गाथा २३	१६ व्यवहारसुत्र गाथा२५-२७

दोहा– सुत्र वाचे तप करे-योग वहन तस नाम
आगम माहे देखीलो भांखे श्री सुरधाम (जीनेश्वरदेव) १
कल्पित विधी योगनी भोलापडीयाभ्रम
धर्म आज्ञा वीतरागनी आज्ञा बहार अधर्म २

ढाल ६ देसी आगलपरवाणे

महानिशीथ अग चुलीया उतराध्ययने हो दीसे योगनानाम
सत्यमार्ग गोपीकरी चैत्य वासीए हो कर्यु दायनु काम ॥सु०१॥
भगवतीनी वाचना सडसठ (६७) दीन हो मुल पाठ सांजोय
इमणा योग छमासना आगम आणाहो विराधक होय ॥ सु०२॥
पन्नवणा पाछल वनी पहेलां हो नहीं होवे योग
देवर्द्धीगणी नदीरची-त्यां सुघी हो आ नहीं हतो आ रोग॥सु०३
आगम अते एम कह्यु अेटलादीन होउ देसन काल
नेविधी उचीवरी पासत्या हो मांडी मननीजाल ॥ सु० ४ ॥
गणधर सुचित विधी एक हो जेमांहे हो, कोण आणेसक
गच्छगच्छना जुदी जुदी कल्पीत हो नविहोवे निशक ॥सु०५॥

भगवती योग कर्या विना नहीं देवे हो गणी पद आज
आगम विरुद्ध प्ररुपणा आधाकर्मी हो खावे पदवी काज॥सु०६
नीशीथ आचारंग जाण्या होवे सुत्र हो व्यवहारनीय रत
जाती कुलने योगता देवी वल्पे हो जैन पदवी सात ॥ सु०७॥
बहल मुनी नीसरू मुनी छमासे हो भणीया अंग अग्यार
पांचमा नवमा जगमा नवमासे हो धन्नो अणगार ॥सु०८॥
जुठा योग वहन करे-आधाकर्मी हो खावे पदवी काज
अभिनार्थे अभिमानीया पदवी लेता हो आवे नहीं लाज ॥सु०९॥
भगवती पहेले सतकर्मे आधाकर्मी हो साधु नवीजाय
रुले अनत समारर्मा-केम काढे हो नीजनें ताण ॥ सु० १०॥
जोग तणा आहारनी लउता चाले नहीं हाथ
[illegible] हा भरतमा सु थयु मलीयो हो स्वारथीयो साथ ॥ सु०११॥
रायमनेद्री साधुना-भोजन मने हो धरमातप
कुमती नहीं योग वहनमा मनडो (वर) बेठोहो नदोलेजेम॥सु०१२
थारा थांधी आवेहो श्राविका काले सु आरसे तप
पापं उदय मन्यासना-अमुक साधुने अमुक थासेतप ॥सु०१३॥
तैयारी करी आवे तेडवा लाभ दओ हो धारा स्वामीनाथ
आधाकर्मीथी शक नहीं देवे लेने हो डबे बने साथ ॥सु०१४॥
पचखाण करे आनिल तणा- दही त्था कंडगो हो खाई जाय
मीठु मरचुं हींगने जीरु- दमनीस हो भोजन बनवाय ॥सु०१५॥
नीवीतो याजे नामनी- कलाकंद हो खीरने दुधपाक
तन्यु गन्युखपेर्पणु बदाम मिरजी हो मेवाने द्राख ।सु०१६॥

पचारराण करे विगय तणा-विगय खावे हो लागे मोटु पाप
महामोहनीयकर्म बांधतो समवायंगे हो भांख्यो श्रीआप॥सु०॥१७
काली आदी हो दस राणीयो अंतगडमा हो आंबील अधीकार
लेपादि विगय वरजीया-केवल पानीहो गई मुक्ति मझार ॥सु० १८
छठ तप आंबील पारणे नवमे अंगे हो धन्नो अणगार
लुखो आहार ये द्रव्यनो समाचारीमा चाल्यो अधिकार ॥सु० १९
साधवीओ आर एकली लेवे हो योग वहन नाम
काल विकाल गणे नहीं, कोण आये हो पन्यासोना काम ॥सु०२०
साधुना स्थानमा साधवी, वरजी हो बृहत कल्प मोझार
आलाप सलाप करवो नहीं-नागण परे बतावी हो नार॥सु०२१
सघ चतुर्विध माहने सुणशे आवेहो व्याख्यान.
प्रविर्तिनी पासे रहे लेवे देवे हो आपसमा ज्ञान ॥ सु०२२ ॥
नानी दीक्षा दीन सातनी मध्यम हो.रारे मासचार
उत्कृष्टो छमासनी जुओहो सुत्र व्यवहार ॥सु० २३॥
पिंडशणा अध्ययन भणावता हमणा हो दजीवणीयां सार
ते पण लुप्त करवामणी ज्ञानहीना हो केवल क्रीया चार॥सु०२४
नानी दिक्षामा साधु रहे वर्ष बे वर्ष हो वर्ष चार
आज्ञा नहीं वीतरागनी-पुन्य नास हो होवे आशातहार॥सु०२५
योग करावे नहीं यत्नने करावता हो पहेला करे कोल (सरत)
एटला पुस्तक आदितणा-रखावेहो पहेली रोकड मोल(मुल)सु०२६
केटली लखु मारा बापजी-लीलाहो जेहनी अपरपार
बुद्धि सुधारो नाथजी मारी, अरजी हो वारवार ॥ सु०२७ ॥

ढाल ६ तात्पर्य के जीनागमोनी वाचना आपनी सिद्धांतोनो रहस्य शिष्य मडळ ने समजावधु परतु जे योगने वहाने लोभादीवृती रथा आधाकर्मादि आहार जे अहीत कारक खोटी प्रवृतीयोछे तेन तिलांजली आपवी। उपधान अधीकार पानां १९-२० लेख किस सुत्रोके आधार सेः—

१ महानिशीथ गाथा ८ — २ सुयगडाग

३ दस वैकालीक — ४ महानिशीथ

दोहरा— गुरु गीतार्थ पासे करे, उपधान तपसार।
जैन विधी अनुसारथी, ते पामे भवपार ॥१॥
धर्म अमुल्य जीनेंद्रनो वेंचाय दुकाने मोल(मुल्य)
धर्म नाम धाडांरुले पन्यासोनी पोल ॥ २ ॥

ढाल ७मी देसी पुर्वनी।

आविल प्रमुख तप करे श्रावक हो भणे गुरुनी पास
श्राविका गुरुणीकने, हमणा हो जोवो पन्यास ॥सु० १॥
उपधान करावतां पहेला पैसा लेवे हो ज्ञानने नामे
पेढी जमावी ब्राह्मण परे कोई काढी हो पेदास नो काम॥सु०२॥
सधवा विधवा मळे घणी भाग्येज भाई मळे दस चार
क्रीया करावे पन्यासजी महिला साथे हो मांडे प्रचार ॥सु०३॥
नारीना परिचयथकी- यति किधो हो घरवास
प्रत्यक्ष देखी केम करे त्यागी हो महिला सहवास ॥सु०४॥
आरभ करावे नवनवा भोजन कारण हो देवे आदेश
माल उडावी करे भोजने गाडो मल्यो हो गुर्जरनो देस॥सु०५॥

मोजन जमे वाणीया-ओघो लेइ जावे हो पन्याम
अमुक साम्न केम कर्युं-(त्यारे बोले) सु गुपे हो बने थाबस्ना
दाम ॥सु० ६॥
नाय लेवे निविवणो आहार तणुं हो, जाणो जम माथ
वदाम तणो हलवो बने जलेबी हो कडाक्द पीळाण ॥ सु०७ ॥
लाडु पेंडा बरफी बने० दुधपाक हो नहीं रहे दुर
देयरा ने पुडला बने-जुदा जुदा शाक हो हाडा भरपुर॥सु०८॥
वृषणी मरे मरे पावरा-भाघुजी हो उठावे माल
घर्म नामे पुर्त जागीया पन्यासे हो बीछावी जाल ॥सु०९॥
घेई ग्रहस्थी जैनमा-नहीं मळे हो खावाने धान्य
उपधान नामे मुनीराजजी माल उठावे हो वली मस्तान॥सु०१०
अमुक बाइये दस दीया तुतो हो मोटा घरनी वेन
पोते धमो आपसो धीरे धीरे हो बोले मधुरा वेण ॥सु०११॥
राडी रांडे ठगरा भगी-मला आव्या हो बोले दीने चोर
ज्ञान नामे मेलु करे-पापोदय हो पडे चोरोमां मोर ॥ सु०१२॥
तृष्णा अवर (आकाश) जेवडी करावे हो माला लीलाम
शादे वधारे वाणीया मेलां करेहो लोभीडा दाम ॥सु० ३॥
सिद्ध साचक रहे वाणीया घर्या दीया हो मळे दलाल
कलीयुगीया मेला थया केम रहे हो साडुनो माल ॥सु०१४॥
ओछा जीवीत कारणे सयम खोले हो अज्ञानी बाल
जरातो डरो परभवथकी माथा उपर भमेछे काल॥सु०१५॥

ढाल ६ तात्पर्य के जीनागमोनी वाचना आपनी सिद्धां तोनो रहस्य शिष्य मडल ने समजावचु परतु जे योगने वहाने लोभादीवृती रथा आधाकर्मादि आहार जे ग्रहीत कारक खोटी प्रवृतीयोछे तेन तिलांजली आपवी। उपधान अधीकार पाना १९-२० लेख किस सुत्रोंके आधार सेः-

१ महानिशीथ गाथा ८ — २ सुयगडांग

३ दस वैकालीक — ४ महानिशीथ

दोहरा- गुरु गीतार्थ पासे करे, उपधान तपसार।
जैन विधी अनुसारथी, ते पामे भवपार ॥१॥
धर्म अमुल्य जीनेंद्रनो वेंचाय दुकाने मोल(मुल्य)
धर्म नाम धाडांसुले पन्यासोनी पोल ॥ २ ॥

ढाल ७मी देसी पुर्वनी।

आजिल प्रमुख तप करे श्रावक हो भणे गुरुनी पास
श्राविका गुरुणीकने, हमणां हो जोजो पन्यास ॥सु० १॥
उपधान करावतां पहेला पैसा लेवे हो ज्ञानने नामे
पेढी जमावी ब्राह्मण परे कोई काढी हो पेदास नो काम॥सु०२॥
सधवा विधवा मले घणी भाग्येज भाई मले दस वार
क्रीया करावे पन्यासजी महिला साथे हो मांडे प्रचार ॥सु०३॥
नारीना परिचयथकी- यति किधो हो घरवास
प्रत्यक्ष देखी केम करे त्यागी हो महिला सहवास ॥सु०४॥
आरंभ करावे नवनवा भोजन कारण हो देवे आदेश
माल उडावी करे भोजने गाडी भर्यो हो गुर्जरनो देस॥सु०५॥

मोडन अमे वाणीया ओघो लेइ जावे हो पन्याम
अशुद्ध साम्न केम कयुं (त्यारे बोले) शुं गपे हो पने थावरना
दास ॥सु० ६॥

नाप लेवे निविवणो आहार तणु हो; आणो जग माय
मदाम तणो हलवो पने जलेबी हो कदाकद पीछाण ॥ सु०७ ॥

लाडु पेंडा बरफी बने. दुधपाक हो नहीं रहे दुर
देपरां ने पुहला पने जुदा जुदां शाक हो हाडा भरपुर॥सु०८॥

तपणी मरे मरे पातरा-माधुजी हो उठावे माल
धर्म नामे धुर्त जागीपा पन्यारो हो पीछावी आल ॥सु०९॥

केई ग्रहस्थी जैनना नहीं मले हो खावाने धान्य
उपधान नामे मुनीराजजी माल उठावे हो पली मरवान॥सु०१०

अशुद्ध पाइये दम दीपा तुनो हो मोटा पग्नी पेन
मोकें पमो आपमो धीरे धीर हो बोले मधुरा पेण ॥सु०११॥

रादी रादो ठगवा भणी मला आग्या हो घोले दीने घोर
ज्ञान नामे मेडु करे-पापोदय हो पडे घोरोमां मोर ॥ सु०१२॥

तृष्णा अरर (आकाश) जेवडी करावे हो पाला लीलाम
वादे वधारे वाणीया मेलां करेहो लोभीडा दाप ॥सु० ३॥

सिद्ध सायक रहे वाणीया घमां दीपा हो मळे दलाल
कलीयुगीया मेळा थया केम रहे हो साहुनो माल ॥सु०१४॥

ओछा जीवीत कारणे सयम खोले हो अज्ञानी बाल
जरातो डरो परभवथकी माया ऊपर भमेछे काल॥सु०१५॥

वणीक भड रूमे वाचीने पन्याम हो केइ क्रोध
भलामण करु तेहने पद छोडी हो करो सोची सोध ॥सु०१६॥
एाचामा सपकीत नसे मायाथ हो आवे मिथ्यात्व
केवा चीतड्ड चीतरु तु जाणे हो मारा त्रीभुवन नाथ ॥सु०१७॥

ढाल ॥ श्री तात्पर्य-गीतार्थाचार्य मुनी महाराज श्रावक धर्म ने योगता पुर्वक जैन धर्मना राम तत्व ज्ञान नित्य धर्म क्रीयानु ज्ञान आपनु अने मा.ये तप करावबो किन्तु जे धाम धुम फोकट आडबरमा द्रव्य खरचाववा के खावा पीवा त्थां पैसाना लोभे के स्त्रीयो साथे जे प्रचारनी प्रवृतीछे तेने दुर करवी तीर्थ यात्रा अधीकार पाना ५४ से ५७ कीस सुत्रोंके आधारसे

१ आचारग गा० २ २ भगवती गा०१ ३ आचारग गा.१२
४ उत्तराध्ययन गा. १२ ५ अनुयोग द्वार गा १७
६ महानीसीथ गा.२० ७ उत्तराध्ययन गा २१ ८ ज्ञाता गा २२
९ भगवती गा २२ १० अतगड दशाग गा २२
११ स्थानायग गा २७

दोहा-तीर्थं तीर्थपतिवणु तीर्थ उतारे पार
तीर्थं सेवाजे करे धन्य तेनो अवतार
तीर्थ यात्रा करवी कही-आचारगनो लेख।
सम्यकत्व निर्मल रहे-बहुला आगम.पेख.

ढाल २३ देसी पुर्वनी

आगम जल,निधी भर्यो मुनी हमाहो नित्य करे कलोल
तप,सयमनी,जाना जुओहो भगवती खोल ॥सु०१॥

गाम गाम जई विचरे कोइ करे हो स्वपरनो उद्धार
विहार करतां तिर्थोनमे करे होते भवनो पार ॥सु०२॥
न्याय उपार्जीत द्रव्यथी पोते हो शुभ गमे भाव–
पुदगलनी इच्छा नहीं भावक हो जाणे चोरनो दाव॥सु०३॥
छरी पाली करे यातरा देवे हो बीजाने महान
चैत्य उद्धार करावतां सार्था हो थेई आतम काज ॥सु०४॥
जीवदयी जतना करे-नहीं बोले हो मृषावाद
परधन ने वांछे नहीं नहीं सेवे हो विषय आस्वाद ॥सु०५॥
रात्री प्रयाण करे नहीं, नहीं जाये हो चोमासे बहार
खाण रत्ननी सघ होवे, हालना हो सुणीये समाचार ॥सु०६॥
सघ उठावे ढुंढीया पासत्था करे अधीक्रु थाप
ओछु अधीकु बोलतां लागे हो मिथ्यात्वनु पाप॥सु०७॥
नहीं करता गुरु कथु अविधी हो लघु प्रायश्चित जाण
विधी करतां भव जल तरे पवी हो श्री क्षीनवर आण ॥सु०८॥
मर्यादा मुनीवर तजी सघ तथी हो करे कोईस
उचो धर्मो आचार ने मु लत्तु हो जाणो जगदीश ॥सु०९॥
नाम लेवे यात्रा तणो माथे राखे हो गाडी ने माल
दाल बाटी ने चुरमां अहींथी लाग्यो हो मफानो ताल ॥सु०१०
साधवीओ साथे रहे-विधवा हो रहे दस बीस
भाग्ये भाई मले कोइ सु लत्तु हो जाणे जगदीस ॥सु०११॥
स्त्रीयो साथे साधु ने वरजे हो आचारंगे एम
उतराध्ययने सोलमें-वाड भागे हो सियलनी तेम॥सु०१२॥

साधु कारण लघु रहे लघु कारण हो गाडीने उंट
जीव हणाय छ कायना पुछेथी हो वली बोले जुठ ॥सु० १३॥
आज्ञा चोरी वीतरागनी महिला साथे हो भागे सियलनी वाड
ममता खुली दीसे पाचमुं व्रत हो एम दीधु ताड(नाम)॥सु० १४
उठे पाछली रातना संघ चाले हो फरे गामों गाम
साधु साध्वी राते चालता निंदाये हो घणा ठाम ठाम॥सु० १५॥
उनो पाणी फरे रातना घडा भरी हो चाइओ रहे (माथ) लार
तेहज पाणी वापरे यात्रा नामे हो जावे संयम हार ॥सु० १६॥
नीलण फुलण कोया गयो-कोण करे जीवोनी सार
निरतु कपा अनुयोगमा-भक्ती नामे हो करे अत्याचार॥सु० १७
सो जणा संघमां होवे उनो पाणी पीवे हो दस वीस
आधाकर्मी आरोगता साधु साध्वी हो भेगा पचवीस ॥सु० १८
सो पचास के दसो रहे-माल मले हो सुणो तीर्थ नाथ
मार्गमां सुझी नहीं हाथ पकडी हो ले आवे साथ ॥सु० १९॥
देव सुरीजी ने तेडीया कुमार पाळे हो कढाव्यो संघ
स्त्रीयो साथे कल्पे नही उतर दीधो हो आगमनो रंग ॥सु० २०॥
गुरु गौतम करी जातरा अष्टापद हो एकला आप
ते वखते हो संघ नहीं कह्यो पासत्थाए पाछल दीधु स्थाप॥सु० २१
यात्रा कीधी पांडवे जाली आदी हो घणा मुनीराज
पाचमा आठमा अंगमां मुक्ति गयाहो साधी आतम काज॥सु० २२
चोमासे गामांतरे श्रावक हो जावे नहीं बीजे गाम
संघ कढावे जाने वदाना. करे हो पोतानु काम ॥सु० २३॥

कईतो धनना लोभीया देइ हो जुठो पुन ने काज
कई रोगादिक काढवा यात्रा करवा हो मले समाज ॥सु०२४॥
वणीक ठगे बधा जगत ने नहीं मुके हो वीतराग देव
ने ने पण ठगवा भणी नहीं छोडे हो अनादिनी टेव॥सु०२५॥
भाग घाले दुकानमा मिलोमा कोई गरो भाग
भाग राखी सट्टा करे उज्वल ने हो लगावे दाघ॥सु०२६॥
लोकोत्तर पद कीया करे-वाछे हो लोकिकना सुख
विपरीया मिथ्यात्वनी एम भाख्यो हो आपे भीसुख ॥सु०२७॥
धर्म शालामां उतरे-पते चोपट हो रमे कहेवा सघ
राजा राणीने मारता- जुओ हो आतरानो रग ॥सु०२८॥
अनार्य भाषा बोलता गाली गुस्सा हो करे क्लेश
केई धर्माद चोरता गीदड हो पहेरे बाघनो वेष॥सु०२९॥
केई तीर्थ पण एवापणा मांडी बेठा हो दुकानोना धाम
मुनीम रोकडीया मलया मेला करे हो फरीने दाम ॥सु०३०॥
पछी नाणु एकठु थता सेर छेत्रे हो नीकोलु पाप
के जमा नाखे बेकमां वणीक लीलालु हो केव थाये माप॥सु०३१
जीर्णोद्धार करावे नहीं नही देवें हो बीजे तीर्थ दाम
ट्रस्टी जाये मारा बापनु मोटा मल्या हो थोडु करे काम॥सु०३२
जैन मघ कहावतां. ढुढक हो जावें वदन काज
(तेरा) पंथी जावें पुजकने आडम्बरथी हो एम बगडी
समाज ॥ सु० ३३ ॥

घमा वमीमा धर्म नहीं धर्म रह्यो नीज आतममाह
नेतो वीरला ओळखे. देखा देखी हो वधे वाजा वजाय ।।सु० ३४
यात्रा कारण जन मले, नहीं हो जैनधरमनो रंग
जो यात्रा तारक कही दुरे मुकयो हो सवेग नो रंग ।।सु० ३५।।
रामायण तो छे घणी लीलाहो जेनी अपरपार
मेझर नामे वाचीने भगतनो हो जलदी उधार ।। सु० ३६ ।।

ढाल २३ नो सार-तीर्थ यात्रा मोक्षनो कारण छे परतु घमा धम मोक्षनो कारण नथी-मारे पौद्गलीक इन्छा छोडी यत्न पुर्वक जिनाज्ञा सहित यात्रा करवी जोइये

मंदीर उपाश्रय अधीकार पाना ५९ थी. ६०

कोन कोन से सुत्रों के आधार से १ जीवाभीगम गा २ २ जबुद्वीप पन्नती. गा २

दोहरा

मंदीर वीतरागना करे जो तेहनी सार
जीर्णोद्धार करावता पामे भवनो पार ।।१।।
कली कालमा मोटको भवीजनने आधार
जीन प्रतीमा जीन सारखी कहीवे सुत्रमझार।।२।।
श्रावक मली पोसह करे पौषध शाला नाम
चाहे कहो उपासरो उपासकनो ठाम ।।३।।

ढाल २४ देशी पुर्वनी

अष्टापदवी उपरे आदिश्वर हो पहोंच्या निर्वाण
चैत्य बनाव्या तेहना शक्रेंद्र हो रत्नोना जाण ।।सु० १।।

र अधीकार आगम तणो जंबु द्वीप हो पन्नती जांण
। परंपरा आचर्ये सुद्ध श्रद्धा हो राखे चतुर सुजाण ॥सु०२॥
ाजा राणी सेठीया-भक्ती भावे हो घणो धर्मनो राग
ंदिर बनावे नव नवा-जिन थाप्या हो लीधो स्वर्गनो मार्ग ॥सु०३॥
हेरानो खर्चो नहीं पोते हो करता जीर्णोद्धार
ाला कुची रहेता नहीं-नहीं हो गोठी मजुर प्रचार ॥सु०४॥
ावक पोते पुजता करता हो ते सार संभाल
डनो काल आरो पांचमो पडया हो केई काल दुकाल॥सु०५॥
ंत्य वास साधु कर्यो श्रावके हो छोडी सार संभाल
ारुर पडी हो मोटा द्रव्यनी श्रावके मली हो एकठो माल॥सु०६
ाुं नामज पाडीउ देव द्रव्य हो ग्रंथे कर्यो लेख
ंडार बनाव्या जुं जुआ-करे हो एक बीजाने देख ॥सु०७॥
ेम जेम द्रव्य वधतो गयो तेम तेम हो अधीक कलेश
रेणा दागीना प्रभु ने बण्या तृष्णा हो वाधे हमेश ॥सु०८॥
डतो काल थाय चोरीयो-लडे झगडे हो माया मस्तान
ाला कुची वीतरागने-चलावी हो बधीके दुकान ॥सु०९॥
ंदीर ने उपासरा मोक्ष कारण हो मांड्यो वीतराग
। कारण कर्यो अन्यथा-शासन ने लगाव्यो दाग ॥सु०१०॥
ाक मदीरनी आशातना-बीजे मदीर हो द्रव्य रहे अनेक
ाक बीजाने आपे नहीं कोई देवे हो उपर लखावी लेख॥सु०११
याज लेवे आकरु पाछा हो आप एटले कोल
ुद्रव उपर नहीं मले तेना हो प्रभु सुणो हे बोल ॥सु०१२॥

त्रस्टीयो कोरट चडे देव नामे हो माडे फर्याद
दीगवर श्वेताबरा माहे माहें हो मुकी मर्याद ॥सु०१३॥
झगडा तो घरना होवे नारे हो मदीरमां आप
देव द्रव्य ने वापरे-कोरटे चडेहो करे बहु पाप ॥सु०१४॥
ममत्वना मदीर बन्या अवदीक हो कहे आगम आप
अवदीकने वादता आज्ञा मागे हो लागे मोटु' पाप ॥सु०१५॥
देव द्रव्यनी वारता सुणो हो प्रभु वणीकनां काम
सेर लेवे मीलो तणा-व्याजे घरे हो बेंकोमा दाम ॥सु०१६॥
मोटा आरभ मिलो तणा श्रावक ने हो कह्यो कर्मादान
माल घाले वीतरागनो पछे हो कलीयुगना एंधाण ॥सु०१७॥
दुकान मकान बधावीने माडे देवे हो करे वेपार
सु भगवान भुखे मरे के पालशो तेने परिवार ॥सु०१८॥
जीर्णोद्धारनी टीपणी-मडावे हो फरे गामो गाम
खरचे आवक केटली थई-हिसाब आवकहो वाचो आतमराम सु०१९
टेकस पडे ग्रहस्थ उपरे धर्म छोडी हो अन्य धर्मे जाय
निर्धनता अज्ञानता विना खर्चे हो धर्मे पेढी आय ॥सु०२०॥
पेढी चलावे देवनी व्याज वटेहो राख्या मुनीम
केइ बेंका केइ याणीया खाई गया हो तेनी नहीं रही सीम॥सु०२१
जीर्णोद्धार करे नहीं-नवा मदीर हो करे पोताने नाम
मोटा आरभ अन्यायनु नहीं खपे हो देव द्रव्यना दाम॥सु०२२
ज्ञान द्रव्य वधारवा ज्ञानोपकरण स्वपरना सुणो स्वाम
गुरु गौतमथी नहीं टले करी देवे हो वधानो लीलाम॥सु०२३॥

माला पहेरावे पैसा लुटवा अधीक हो एक एकनुँ मान
जीव वापडा सुँझरे जेवा गुरु हो तेवा जजमान ॥सु०२४॥
पहेलां पर्व आराघना हमणा हो करे वेपार
ते द्रव्यनु ▯ होवे सुणजो हो तेना समाचार ॥सु० २५॥
झगडा तो आखा वर्षना काढे हो पर्युषण काल
पर्व व्याख्या कथा रही मांहो मांहे हो आवे गालम गाल॥सु०२६
नाम कीर्ती अभीमानथी वोली बोले हो बीजा लेवे तोड
वाजा वागे रणतुरा इज्जत राखे हो(नहीं)नथी सके छोड॥सु०२७
ज्यारे पैसा देवा पडे वाघा काढे हो वली अमुका एम
कोरट चडे धरणा देवे फजेती हो वली करे तेम ॥सु०२८॥
देव ज्ञान द्रव्य तणा पोतुं राखे हो केइ गृहस्थी पास
पोते पैसा वापरे काय काचो हो होवे देव द्रव्य नास॥सु०२९
प्रवृती चैत्यवासी तणी सत्य विजये हो वधी दीधी छोड
पतिये मली सरुकरी. हजी सुधी हो नहीं सके तोड ॥सु०३०
निषेध नहीं विधी तणो अविधीये लागे मोटु पाप
केटलु लखु मारा बापजी नही छानु हो बधु जाणो आप॥सु०३१

ढाल २४ का सारांश भगवानना देरासर खरेखर मोक्षना दातार छे अने तीर्थ केदेरासरनोरक्षण करवु ते सान ना रक्षण करवा जेवुछे. कलीकालमा देरासरो करावबा अगर बचावबा कल्पवृक्ष तुल्य इच्छीत फलने देवावाळाछे परतु जे मंदीरो ने नामे लडवु जगडवु वैमनस्य करवु. ए दुःख दाई थई पडेछे माटेनेने त्याग करवु.

भाषा सुके चुके अगर दृष्टीदोषथी अगर कोई ना खोटा पत भेदथी गेर वाजबी लागे ते सर्वे मिच्छामिदुकड दई सपाल करुउं बीजोम विगत फरी ए पठीना पुस्तक मां आवसे.

आपुस्तकोंमां अगाउथीमददेवावाला दाता-रोना नाम

१००) एकमो रुपया सेठ हरीदास सोभागचन्द चेरावलवाला हाले मुकाम मुम्बई न० २ जुनी हनुमान गली-माधव जी द० मालो ३६

१००) एकमो सेठ ताराचन्द दलीचन्द. लापोदवाले. दुकान मु पुना न०१ठे राहमाहेब केदारी रोड.

५०) पचास रुपया साह अमरतलाल जी मोदी. मु सिरोही हेड मास्टर ठी मोदीयों का बास.

५६⌣) छपन्न रुपया एक आना मु० गुढा बालोतरा में सेठ दलीचन्द सपनाजी ए परचुरण परचुरण टीप करने मु सादडी सेठआक की पेढी में मनीयाडर भेजा

२१) एकवीस रुपया मु. अगवरी वाले सेठ हिम्मतमल जी वनाजीने अपने तरफ से मनीयाडर सादरी सेठ आक को भेजा।

(गुरुभ्यो नमः)

इस पुस्तक का सुद्धी पत्रक

पाने	पत्ती	असुद्ध	शुद्ध
१—	७—	छे कायना—	छ कायना
१—	११—	चिरसावध—	सिरसावद्य
१—	१३—	आद्रि नणा—	आदि ठाणा
१—	२०—	जमजवानी—	समजवानी
२—	४—	सूछे १—	सुछे ?
२—	१७—	(भडारीनमीचद१३के पाछे)	—१४ चुनीलाल
३—	६ ७—	विघाशाणा—	विद्याशाला
४—	४—	केसरी—	पजाब केसरी
८—	१६—	आदिग्राणा—	आदि ठाणा
४—	२१—	कयागोक्ने—	कर्याबो केने
४—	२२—	कयाथी चालेन—	कयाथी चाल्योते लखबो एज
५—	६—	उत्तर में है—	उत्तर ये हय
५—	११—	कहां है—	कहा जाता है
५—	१५—	उपाध्यका—	उपाध्यायका
५—	१७—	साधुय काला रगका—	साधुका काला रग
६—	१५—	उपहाणे—	उवहाणे
७—	६-१०—	और प्रतिवादी—	और वादी प्रतिवादी
८—	१४—	करते वा—	करने का
६—	१८—	पुरतु—	परतु
६—	२२—	आपसे—	आपणे
१०—	१६—	गणा ७—	ठाणा ७

पाने	भक्ती	अशुद्ध	सुद्ध
१६ हासे पोसालाये मेंसे मुनीराजो को पत्र येसो नोंध पाती है।			
१६—	२०—	रगविजयजी—	रगविमलजी
१९—	३—	आदीसणा—	आदिठाणा
१९—	५—	पुण्यनन्द विजय—	पुर्णानदविजयजी
१९—	६—	आदीसुणा—	आदिठाणा
१९—	७—	व्याख्या चारित्रदपजी-	व्याख्यान वाचस्पती
१९—	१०—	तीर्थंद सुरोजी—	तीर्थेद्र सुरीजी
२०—	१—	पुणानद—	पुर्णानद
२०—	६—	खुलासवार—	खुलासावार
२०—	१८—	आठा—	आठ
२०—	२२—	कमलेविजय	कमल विजय
२१—	१०—	सरुयात—	सरुवात
२१—	१५—	मोलावे—	मेलवे
२१—	१८—	विकास करववा—	चोकस करवा
२२—	७—	पयुपण—	पर्युषण
२२—	१६—	नीलावणे—	पीलावण
२३—	१२—	भाप—	आप
२४—	२—	भद्रवा—	भाद्रवा
२४—	४—	प्रदा—	पदो
२४—	६—	घोणा—	घोला
२४—	२१—	तेमी—	तेमज
२४—	१३—	गमाना दरवाजे—	गमारानादरवाजे
२४—	१४—	तेजा—	तेना
२४—	१८—	आवती—	आववी

पाने	पंक्ती	अशुद्ध	सुद्ध
१०–	२१–	सुण ओर वांचने–	सुना और वाचने में
११–	४–	ये नोकार–	ए नोकार
११–	४–	सयभुमल्या–	समये भुल्या
११–	६–	दीपमांहे सो नोकार–	द्दीपमांहे सो नौकारस
११–	१३–	लाल अगर समान–	लाल अगार समान
११–	१४–	कर्म शत्रु जितने–	कर्म शत्रु जीतनें
११–	१–	श्रावकामे १६–	श्रावको में
१२–	७–	मठम–	मठम
१२–	६–	ऐक मठम–	एक मठम
१२–	१५–	खीवाणुनीं–	खीवाणजी
१२–	१६–	जणावेनु–	जणावानुं
१३–	६–	वघार–	वधारे
१३–	७–	भद्रकर विजयजी–	भद्रकरविजय जी
१३–	६–	मात्र–	मोक्ष
१३–	१३–	श्रवकाना	श्रावकोना
१३–	१४–	वण वेलछ	वर्ण वेलछ
१३–	१४–	मारो पासा–	मारी पासे
१३–	१५–	बोआपाढो–	बीजापाठो
१४–	६–	महारज–	महाराज
१४–	१३–	पडीत–	पडोत
१४–	१५–	वधात्रेलछ–	वंधायेलछे
१४–	१५–	माला–	माटला
१४–	१८–	मवीज–	एवीज
१५–	१०–	शाखवी–	राखवी

पाने	पक्ती	अशुद्ध	सुद्ध

१६ ह्यासे पोसालाये में से मुनीराजो को पत्र ये सो नोंघ ग्राती है।

पाने	पक्ती	अशुद्ध	सुद्ध
१६	२०	रगविजयजी	रगविमलजी
१६	३	ग्रादीसणा	ग्रादिठाणा
१६	५	पुण्यनन्द विजय	पुर्णानदविजयजी
१६	६	ग्रादीसणा	ग्रादिठाणा
१६	७	व्याख्या चारित्ररत्नजी-	व्याख्यान वाचस्पती
१६	१०	तीर्थंद सुरोजी	तीर्थेंद्र सुरीजी
२०	१	पुणानद	पुर्णानद
२०	६	मुलासवार	गुलासावार
२०	१८	ग्राठा	ग्राठ
२०	२२	कमलेविजय	कमल विजय
२१	१०	सख्यात	सख्यात
२१	१५	मोलावे	मेलवे
२१	१८	विकास करववा	चोकम करवा
२२	७	पयुपण	पर्युषण
२२	१६	नीलावर्ण	पीलावण
२३	१२	माप	ग्राप
२४	२	भद्रवा	भाद्रवा
२४	४	प्रदा	पदो
२४	६	घोणा	घोला
२४	२१	तेमी	तेमज
२४	१३	गमाना दरवाजे	गमाराना दरवाजे
२४	१४	तेजा	तेना
२४	१८	ग्रावती	ग्रावदी

पाने	पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
२५	४	पुछला	पुछेला
२५	५	आयीये	आपीये
२५	७	सु०अ०	सु० आ०
२५	२१	आवनी	आथवी
२६	३	श्रा०१-६	श्रा० व० ६
२६	१०	थएाया	जाणया
२६	१५	घणज	घणाज
२६	२२	मुकपी छे	मुक्यो छे
२७	४	छनाय	छनाप
२७	५	धाकेन	थवे नही
२७	५	माणसाणी	मोलसाण
२७	६	पदसे	पदने
२७	६	श्रोणसाण	मोलक्षाण
२७	१०	नीलो	नीला
२७	१२	बीजी कई	बीजो कोई
२७	१३	गुणे	गुणो
२७	१४	गुणो	गुणो
२७	१५	रामजी	राखजो
२७	१७	लेवा	लेरा
२८	६	निमागवार	विमागवार
२९	११	उजमाण	उजमाल
२९	१२	श्रेजो	श्रेज
२९	१५	भमि	भावी
२९	१५	नाम	वान

पाने	पक्ती	अशुद्ध	सुद्ध
२९	१६	मनी	मेनी
२६	१७	जाणन	जाणता
३१	६	वाणेदया	चाणोदसु
३१	१०	गजू	राज
३१	१५	लोका	लोकावसी
३१	२२	चोलोद	चाणोद
३२	२१	पाठ	पछि
३३	१	यहहोवानो समयहैछ	एह होवानो समय
३३	११	सुदी ६ मगल	सुदी ७ मगल
३३	१०	प्रविष्टा	प्रविष्टा तारीख
३४	३	कारतकसुदी १४सनी	कारतक सुद ५ स
३४	१५	चडासु चडा	चडासु चडु
३७	३	सुरदासजी ने	सुरदास जी की
३७	१९	उनकी पीडो	उनकी पीडा
४१	११	मीमीया	भीमीया
४१	१६	Bieagam	Badagaum
४२	१३	रगमल जी	रगविमल जी
४२	१३	ढाला	ठाणा
४२	१४	मध्वे	मध्ये
४२	१६	लखवाने	लखवानो
४२	१७	लखोठु	लखोसु
४२	२०	प्रमेनि	प्रमोने
४२	२०	उपाश्रवे	उपाश्रये
४३	१	स माभानोपाडाम्रा	ठे० माभानापाडा

पाने पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
४३—१—	भललनो उपाश्रय—	विमलनोउपाश्रय
४३—६—७—	महाराजजो अज्ञाथी—	महाराजनी आज्ञाथी
४३—६—	धमलाभम्या—	धमलाभम्यान
४३—१३—	ता० ३६—६—४८—	ता० ८—६—४८
४४—१—	अन वि०—	अज वि०
४४—५—	आनदा—	आणन्द
४४—७—	रगावावन—	रगवावत
४४—६—	३५—	३५
४४—५—	भादरवा सुद ११—	भादरवावद ११
४४—१२—	रगा के भद का खुलासा नहीं—	रगा के भद का सा खुलासा नही
४४—१६—	महेन्द्रसुरी म०—	महेन्द्रसुरी आ०
४५—५—	छ—	छ
४५—८—	कहुछ—	कह्यु छे
४५—६—	जावु—	जोवु
४५—१०—	हायछे—	होयछे
४५—११—	तीथकना—	तीथङ्करना
४५—१२—	होयछ—	होयछ
४५—१६—	भादरवा ६—	भादरवावद ६—
४५—१७—	धमलाभर्मवचावस—	धर्मलाभवचावसी
४६—१—	डडा—	उडा
४६—२—	करला—	करला
४६—१४—	विजयोदसुरी—	विजयोदयसुरी
४६—१६—	कोठीपल—	कोठीपोल

पाने पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
४७—१२—	पुरखानोसार—	पुरव नोसार
४७—१३—	मरनासमरो—	मरतासमरो
४७—१४—	जगनासमरो—	जागतासमरो
४८—६—	कोइमो—	कोइमी
४८—६—	सिखान—	सिखने
४६—६—	साधुपद २८—	साधुपद २७
४६—८—	अठार—	अठाई—
४६—१६—	पाणीगयन—	पाणीमथन
५०—१६—	पचमुत—	पचमुत
५१—१६—	डाक्टर—	डाक्टर से
५२—१७—	ममरे—	ममरे
५२—१६—	पापबघेतो—	पाप न बघेतो
५३—१—	उदर—	उदर
५३—१—	गीरासी—	गिरोसी
५३—१५—	जमजाना—	या अलग होना
५३—१६—	वगेरा—	नीभरा
५३—२१—	नवतत्वा स—	नवतत्वों से
५४—२—	होजता है—	हो जाता है
५४—४—	समझताहुँ—	समझाताहुँ
५४—१५—	पाणरी—	पाणी
५४—१८—	मिलना—	मिलता
५४—२२—	हगलवाज—	दगलबाज
५४—२२—	थ+ह—	भ+ह
५५ १७—	जानना रोगामा—	जातना रोगोमा
५६—१०—	रगना-पुरता—	रगनो पुरतो

पाने	पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
५७	७	अग्नेवमम तत्व	वायुतत्व
५७	८	यरलवशपहूंस	आकाशतत्व
५८	५	गुणकार	गुणाकार
५८	१५	मिलने	मिलते
५८	१३	हाइपोजर	हैड्रोजन
६०	२	दुग	दुख
६०	२	समार	सागरे
६०	१६	व	करे
६०	१७	मचार	सजार
६०	१७	अपना	अपान
६०	१८	चोये	चोथो
६०	१८	पुन	पुन
६०	१६	मनाप	अपान
६०	२०	सघोगवोए	सघोगन
६०	२०	अध्याय	अध्यान
६१	५	साहसवह	सोहमशब्द
६२	१०	पदवोपर	पदवीपर
६५	१७	मानने	मनाने
६५	१६	ऋषभ देवध्वनी	ऋषभदेवसे वेदध्वनी
६६	१	ऐसो	ऐसे
६६	४	इनोकी	आइनोने
६६	१५	देसमें	वेसमें
६६	२२	आपनासे	आपनासे
६७	३	अपने शास्त्र	अपनेशास्त्रको
६७	२०	जनपर	जिनपर
६७	२२	हिंदु	हिंदुके
६८	१	लेना चाहिए	लेना नही चाहीये
६८	८	मोनवोसे कबीर जी	मोतवी से कबीरजी

पान पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
७०—६—	श्रो	श्रोर
७०—१०—	मासतीकको—	नासतीकको
७०—१३—	योगदोवहन—	योगोदवहन
७०—१८—	निवियान्य—	निवियाना
७१—१५—	स्यालोए—	स्यलोए
७२—१०—	हूडो—	हुडो
७२—२२—	घ्यान—	ध्यान
७३—१—	रहय—	रहे ह
७३—१६—	माडीहो—	मांडीहो
७३—१७—	नहीत—	तेहीज
७४—७—	बचावे—	मचावे
७४—६—	पहाउ—	पहाड
७४—१३—	ळेवे—	लेवे
७४—१६—	ळेवे—	लेवे
७४—१६—	नु—	नुं
७५—८—	(एपाण)—	(एघाण)
७५—१३—	मु डल—	मुमडल
७५—१५—	बोघान—	बोघात
७५—१७—	(१५) पासम्या—	पासत्था
७६—१०—	नेमाकाइ—	नेमाकाई
७६—११—	लाय—	खास
७६—११—	भावाजाय—	भावीजाय
७६—२१—	सव—	स्व
७७—८—	नारक—	तारक

पाने पंक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
७६—५—	नेज—	नज
८०—१—	उत्त्रम—	उत्क्रम
८०—३—	दाडा—	डावा
८०—४—	वाचता—	वाचना
८०—१६—	जेथीरीते—	जेवीरीते
८१—१५—	पाठसाजोय—	पाठमाजोय
८१—१६—	हाउ देसन—	हो उदेसन
८१—२०—	नेविधो—	ते विधी
८१—२२—	गच्छगच्छना—	गच्छगच्छनो
८२—५—	नोमकमुना—	तीसकमुनो
८२—८—	अगीनाथ—	अगीताथ
८२—१८—	आधाकर्मीयोसक—	आधाकर्मीथीसके
८२—१८—	डवे—	हुवे
८२—१६—	करवो—	करवो
८२—२२—	मिरजा—	मिरजी
८३—३—	अवगडमा—	अवगडमा
८३—७—	आव—	आवे
८४—२२—	भीजने—	मोजनै
८६—२—	सोची—	साची
८७—५—	सहान—	सहाय
८७—१६—	घर्मो—	घर्यो
८८—५—	चालनी—	चालती
८८—१०—	निरतुकपा—	निरनुकपा
८८—१७—	जातस—	जातरा

पाने पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
८८—१९—	यात्राकीधो—	यात्राकीधी
८८—२२—	वदाना—	वदावा
८९—१—	सोमीया—	लोमीया
८९—४—	नेने—	तेने
८९—१५—	ळेवेहोमिलोनु—	लेवेहो मिलोनुं
९०—२—	नोनो—	सेतो
९०—६—	हो जलदी—	होकरो जलदी
९०—८—	मारे—	माट
९०—२०—	अष्टापदवी—	अष्टापदनो
९१—२२—	है वाल—	हेवाल
९२—१४—	खरचे—	खरच
९२—१६—	पेढी—	पेठी
९२—१८—	वेका—	बेको
९३—३—	आराधना—	आराधतां
९३—८—	रणतुरवा—	रणतुरनां
९३—१८—	साननां—	सासनमां
९३—२०—	देवावाकाछे—	देवावालाछे
९३—२१—	वरमुं—	वरवु
९३—२२—	माटेनेन—	माटेतेने
९४—३—	समास—	समाप्त
९४—६—	व० मालो ३६—	दयालश्रोजेमालेना०७६
९४—१६—	सेठ भाव—	सेठ भा+क
९४—१९—	भाव—	सेठ भा+क